जून २०११ मूल्यः ₹ १०

दादावाणी

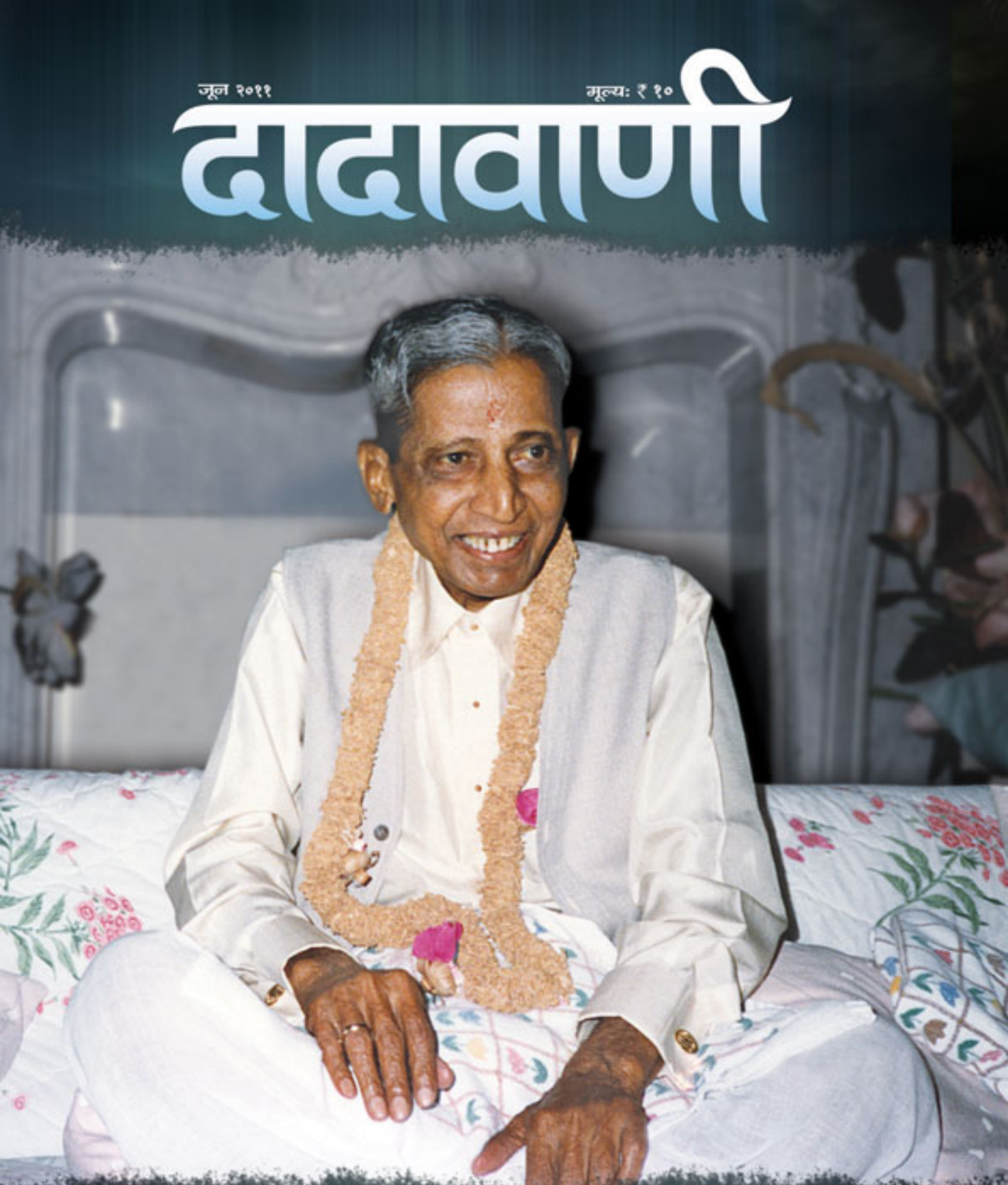

पोतापणा है तब तक ही भेद है और तब तक ही भगवान दूर है।
आपने पोतापणा छोड दिया कि भगवान आपके पास ही है,
भगवान ही आपका चला लेंगे। फिर आपको कुछ करना ही नहीं है।

तंत्री तथा संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : ६, अंक : ८
अखंड क्रमांक : ६८
जून २०११

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

नहीं करना चाहिए रक्षण *पोतापणुं* का

संपादकीय

श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि ज्ञानी पुरुष ही आपका आत्मा है, क्योंकि वे संपूर्णरूप में देह से भिन्न बरतते हैं, जो *पोतापणा**(मैं हूँ और मेरा है ऐसा सूक्ष्म आरोपण) रहित हैं। *पोतापणा* रहित, इसके क्या लक्षण होते हैं? वे गठरी की तरह बरतते हैं, निरंतर संयोगो के अधीन रहते हैं, कुदरत जैसे रखे वैसे रहते हैं। और ऐसे ही आश्चर्य की प्रतिमा सम प्रकट ज्ञानी पुरुष परम पूज्य दादा भगवान के आत्मविज्ञान के द्वारा स्वरूप की प्राप्ति सहज है, सुगम है। ऐसे ही अनुपम आत्मज्ञानी के द्वारा हमें स्वरूपज्ञान की प्राप्ति सहज हो जाती है। और, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की जागृति निरंतर बरतती है, किन्तु उस पद को अनुभव में आने से कौन रोकता है? तब कहे, *पोतापणा*। आत्मज्ञान होने के बाद 'मैं' और 'मेरा' चला गया किन्तु *पोतापणा* अभी भी रहा है।

पोतापणा यानी भरा हुआ माल, डिस्चार्ज अहंकार। उस डिस्चार्ज अहंकार में खुद कर्त्ता बनता है। बुद्धि के कहे अनुसार चले उसे *पोतापणा* कहते हैं। प्रकृति का रक्षण करना, पुद्गल का रक्षण करना उसे *पोतापणा* कहते हैं। खुद रक्षण तो करता ही है, किन्तु एटेक (वार) भी करता है, किसीको दुःख हो ऐसा *पोतापणा* किस काम का? और जब कपट करके प्रकृति का रक्षण करता है तो उसे गाढ़ *पोतापणा* कहते हैं, खुद प्रकृति का रक्षण करे तो फिर प्रकृति सहजपन आने ही नहीं देगी न!

यदि *पोतापणा* पकड़ सहित हो तो उसे बहुत सख़्त *पोतापणा* कहते हैं। ऐसा *पोतापणा* बहुत जोखिमवाला होता है। इसे तो आत्मा का घात ही किया कहते हैं। यदि *पोतापणा* कम (हल्का) हो तो वो छूटता जाता है लेकिन यदि *पोतापणा* को छोड़े ही नहीं तो फिर इसका तो कोई अंत ही नहीं आएगा न! पहले का भरा हुआ माल निकलता है वो दख़ल करता है। उल्टी समझ छूटती नहीं है इसलिए दख़ल हो जाती है। किन्तु यदि दख़ल करना छोड़ दे तो *पोतापणा* आसानी से छूट सके ऐसा है।

पोतापणा एकदम से नहीं छूटता, किन्तु जानने से (समझने से) धीरे-धीरे छूटता जाता है। *पोतापणा* एक मैल है जो धीरे-धीरे घिसते-घिसते चला जाता है। *पोतापणा* अंधा होता है, उस व्यक्ति को अपनी भूल नहीं दिखती, और दूसरों के दोष देखें तो तब तक हल कैसे आएगा? खुद की भूल हो रही है, ऐसा ख़्याल में रहे तो हमेशा के लिए *पोतापणा* छूट जाता है। किन्तु ऐसा ख़्याल में रहता नहीं है न! क्योंकि, मीठास के कारण भान नहीं रहता। जब मीठा लगता है उस समय 'खुद को' भूल जाता है। मान, गर्वरस, पूजे जाने की कामना, मैं जानता हूँ, ये सारे *पोतापणा* को मज़बूत करने के साधन हैं, इन साधनों से 'साध्य' कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

अब ये *पोतापणा* पिघलेगा कैसे? ज्ञान प्राप्त होने के बाद उदय में तन्मयाकार नहीं हो और जागृति उपयोग में रहे, वैसे-वैसे आत्मा का अनुभव होता जाता है और अहंकार कम होता जाता है। ऐसे सब रेग्युलर होता रहता है, और *पोतापणा* पिघलते-पिघलते ज़ीरो (शून्य) हो जाए यानी फिर उसे ज्ञानी ही कहते हैं।

यदि यथार्थ पुरुषार्थ में आए, तो ज्ञानी पद प्राप्त करा सके ऐसा ये विज्ञान है। और हमारा ध्येय भी यही होना चाहिए न? प्रस्तुत संकलन में, *पोतापणा* क्या है, किस आधार पर टिका हुआ है, और उसमें से छूटने के उपाय, और ज्ञानी की दशा का अद्भूत विज्ञान यहाँ खुला होता है, जो हमें *पोतापणा* के समक्ष समझ के साथ पुरुषार्थ करने के लिए एक नयी दिशा बक्षता है।

जय सच्चिदानंद....

* पोतापणा शब्द का मूल गुजराती शब्द पोतापणुं है, हिन्दी में इस दादावाणी में वाक्यरचना सुचारु लगे इसलिए 'पोतापणा' शब्दप्रयोग किया गया है।

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

नहीं करना चाहिए रक्षण *पोतापणुं* का

एक ही ध्येय, होना है 'शुद्ध-स्वरूप'

दादाश्री : तुम्हारा ध्येय, क्या होना है ?

प्रश्नकर्ता : दादा के जैसा बनना है।

दादाश्री : इस बात को कहाँ से बीच में लाए? दादा के जैसे बनकर क्या करना है? शुद्ध होना है, ऐसा रखो न! हमें मोक्ष में जाने की बात करनी है। दादा जैसा बनना है, ऐसा बनना है, ऐसा कोई भाव नहीं करना चाहिए। ऐसा करनेवाला मर गया समझो, लटक गया। अपने पास शुद्ध उपयोग और सारे साधन हैं, और शुद्ध हो गए इसलिए दादा से भी आगे बढ़ गए। दादा जैसा नहीं, दादा से भी आगे बढ़ गए। 'हमें ऐसा बनना है' ये सब किस लिए? ऐसा हेतु नहीं बाँधना चाहिए। शुद्ध ही रहो।

प्रश्नकर्ता : फिर चाहे जो हो।

दादाश्री : उसका फल जो आए सो। बाकी, ऐसा बनना है, वह भाव तो बंधनकारी है।

प्रश्नकर्ता : अमुक ध्येय तय किया हो न तो उस ध्येय के अनुसार सब जल्दी चलता रहता है।

दादाश्री : ध्येय यही तय करना है, शुद्ध उपयोग। और हम तो शुद्ध ही हैं। वर्ना फिर वहाँ पर *पोतापणा* रहा करता है। आपका शुद्ध उपयोग *पोतापणा* रहित कहलाता है।

पोतापणुं में क्या आता है?

प्रश्नकर्ता : *पोतापणुं* में क्या आता है?

दादाश्री : ये सब जो तुम बोल रहे हो वही। तुम बोल रहे हो वही *पोतापणुं*...

यदि कोई तुम्हें पकड़कर दूसरे गाँव ले जाए, तो तुम जाओगे? नहीं। उसे *पोतापणुं* कहते हैं। और यदि वो तुम्हें पकड़कर दूसरे गाँव ले गया, गठरी की तरह, तो *पोतापणुं* छूट गया (खत्म हो गया)।

प्रश्नकर्ता : यदि ऐसे पकड़कर कोई दूसरे गाँव ले जाए, तो कोई जाएगा ही नहीं न!

दादाश्री : बात को बदल दोगे, लेकिन तुम जाओगे नहीं। *पोतापणुं* जिसे ज़्यादा होता है वो नहीं जाता। कम हो, वो जाता है।

प्रश्नकर्ता : भोले व्यक्ति में *पोतापणुं* कम होता है?

दादाश्री : हाँ, भोलेभाले व्यक्तिओं में *पोतापणुं* कम होता है! तुम सबकुछ अपनी धारणा के मुताबिक करते हो न या किसीके कहे अनुसार करते हो?

प्रश्नकर्ता : अपनी धारणा के मुताबिक ही करता हूँ।

दादाश्री : उसे ही *पोतापणुं* कहते हैं।

द्रष्टांत, पोतापणुं का

प्रश्नकर्ता : दादा, *पोतापणुं* का एक द्रष्टांत दीजिए न!

दादाश्री : यदि हम यहाँ से मुंबई जा रहे हों और कोई कहे कि 'आपको वहाँ नहीं जाना है।' तो

हम सबके भाव देख लेते हैं कि सब क्या कहना चाहते हैं, यदि सब कहें कि नहीं जाना है तो हम वापस लौट जाते हैं। फिर घर आने के बाद फिर से कोई कहे कि 'जाओ', तो फिर से जाते हैं। फिर कहे कि 'वापस चलो' तो वापस लौट आते हैं। ऐसा सौ बार कोई करे तो भी हम वैसा ही करते हैं। 'मैं कहता हूँ, मैं जानता हूँ', ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं।

पोतापणुं अर्थात् क्या? उदाहरण के तौर पर ये बहन कहे कि 'शनिचर को जाएँगे', तब भाई कहेंगे कि 'नहीं, सोमवार को जाओ।' तब हम कहते हैं कि 'आप सबको जैसा अनुकूल आए वैसा।' हमारी इसमें कोई दख़ल नहीं होती।

वर्ना दूसरी सभी जगह तो ऐसे नियम होते हैं, कि दादा ने क्या कहा? आज्ञा है, इसलिए सोमवार को जाना है, फिर सभी को एक्सेप्ट कर लेना पड़ता है। हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता। हमें तो ये लोग अहमदाबाद, बड़ौदा लाते हैं न, वह गठरी की तरह लाते हैं और गठरी की तरह ले जाते हैं। कोई गठरी लाता होगा? जब *पोतापणुं* चला जाता है उसके बाद गठरी ही हो गया कहलाता है। आपकी समझ में आया न? इसे *पोतापणुं* कहते हैं। जब बुद्धि चली जाएगी तब ये *पोतापणुं* चला जाएगा।

'ज्ञानी' को नहीं होता पोतापणा

पोतापणा रहित के लक्षण क्या हैं? *पोतापणा* नहीं है, मतलब क्या? यदि सत् पुरुष से ऐसा कहो कि 'आज मुंबई चलो।' तब 'नहीं जाना', ऐसा वे नहीं बोलते। लोग उन्हें मुंबई ले जाएँ तो वो गठरी की तरह जाते हैं और गठरी की तरह वापस आते हैं। अर्थात् *पोतापणा* नहीं है। हमें यदि पूछे कि, 'दादाजी, हम कब जाएँगे?' तब हम कहते हैं, 'आपको ठीक लगे तब।' हम और कुछ नहीं बोलते। फिर वे लोग इस गठरी को ले जाते हैं, उसमें गुनाह नहीं है। हम ही ऐसा कहते हैं कि, 'भाई, आपको ठीक लगे तब ले जाना।' क्योंकि, *पोतापणा* नहीं होता। और जिसे *पोतापणा* होता है वो गठरी की तरह जाएगा क्या? वो तो कहेगा कि, 'आज नहीं आएँगे।' और मेरा तो *पोतापणा* है ही नहीं! गठरी बनने के लिए कोई तैयार होता है? एक भी व्यक्ति ऐसा बोलता है?

हमें वहाँ मुबंई और बड़ौदा में कई लोग कहते हैं कि, 'दादाजी, आप जल्दी आए होते तो अच्छा था।' ऐसा सब बोलते हैं। तब मैंने कहा, 'गठरी की तरह जब मुझे लेकर आते हैं तब मैं आता हूँ और गठरी की तरह वापस ले जाते हैं तब मैं जाता हूँ।' फिर वे समझ गए। फिर वे कहते हैं कि, 'आप अपनेआप को गठरी की तरह क्यों कहते हो?' अरे, ये गठरी ही है न, दूसरा क्या है? संपूर्ण भगवान है भीतर, लेकिन बाहर तो गठरी ही है न! अर्थात् *पोतापणा* रहा नहीं है न!

पोतापणा छूटा यानी मोक्ष

प्रश्नकर्ता : लोगों के कहे अनुसार करें, गठरी की तरह ले जाएँ, वैसे जाएँ, खुद अपना *धार्युं* नहीं करवाए, तो उसका परिणाम क्या आता है?

दादाश्री : मोक्ष।

प्रश्नकर्ता : उसका परिणाम मोक्ष आता है। उसे मोक्ष वहीं पर बरतता है? मोक्ष उसे एट ए टाइम (उसी समय) बरतता है? उसे मोक्ष उसी जगह पर ही बरतता है?

दादाश्री : हमेशा के लिए मोक्ष। सिर्फ उस जगह पर ही नहीं बल्कि हमेशा के लिए। *पोतापणा* छूटा कि मोक्ष ही हो गया न! अभी भी मोक्ष तो बरतता ही है, लेकिन जब *पोतापणा* जाए तब एक्ज़ेक्ट मोक्ष बरतता है।

ज्ञानी, पब्लिक ट्रस्ट के समान

ये जो आपको दिखाई देते हैं न, वो तो 'पब्लिक ट्रस्ट' है, 'ए.एम.पटेल' के नाम का। उन्हें

सत्संग के लिए जिन्हें ले जाना हो, तो ले जाते हैं। जैसे संयोग मिले, वैसा करते हैं। क्योंकि इसमें 'हमारा' *पोतापणा* नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उज्जैन पधारने की जो बात कही न, उस प्रश्न का दादाजी ने जवाब नहीं दिया।

दादाश्री : यदि *पोतापणा* हो, तो मैं कह सकूँ न, कि 'भाई, अमुक समय पर आएँगे।' आपने आने की माँग रखी है इसलिए मैं उस बारे में नेगेटिव नहीं हूँ, पोज़िटिव ही हूँ, किन्तु वहाँ आने के लिए सारे एविडन्स मिलने चाहिए न? प्रबंध होना चाहिए न? मैं इन लोगों से ऐसा नहीं कहता कि अमुक तारीख को चलो। वे लोग मुझसे कहते हैं कि आप अमुक तारीख पर चलो। मैं तो फ्री ही हूँ। लेकिन सभी जगह के लिए, बहुत लोगों की माँग होती है न, इसलिए इन लोगों को तय करने में देर लग जाती है। किन्तु वह भी होगा। आपकी इच्छा पूरी होगी।

इसलिए बरते अधीन निरंतर

मुझे जहाँ ले जाएँ, वहाँ हम जाते हैं। कई चीज़ें हमें नहीं खानी हो फिर भी हम खाते हैं, नहीं पीनी हो फिर भी पीते हैं, जो नहीं करना हो वो सबकुछ हम करते हैं। उसमें हमारा नहीं चलता। फरजियात है न! सामनेवाले के 'एन्करेजमेन्ट' के लिए हम आपकी चाय पीते हैं। चाय बहुत कड़क हो, प्रकृति को रास नहीं आए ऐसी हो, लेकिन आपको आनंद होता है न, कि 'दादा' ने मेरी बनाई हुई चाय पी। इसलिए हम पी लेते हैं।

इतने दिनों की मुसाफरी की, लेकिन उसमें भी लोगों के कहे अनुसार ही रहते हैं। वो कहे कि 'यहाँ रहना है।' तब मैं कहूँ कि, 'हाँ, रहेंगे।' वो कहे कि 'अब यहाँ से उठ जाओ', तो वैसा करते हैं। हम में 'हमारापन' नहीं होता। 'हमारापन' का उन्मूलन हो गया है। बहुत समय तक 'हमारापन' किया। हम में तो पहले से ही ममता बहुत जुज थी, इसलिए *भांजगड* (झँझट) ही नहीं थी।

ऐसा है न, मैं तो सबके अधीन रहता हूँ, उसका क्या कारण है? मुझ में *पोतापणा* नहीं है। इसलिए मैं तो बिल्कुल ही संयोगो के अधीन रहता हूँ। मैं तो आपके अधीन भी रहता हूँ, तो फिर संयोगो के अधीन तो रहूँगा ही न! अधीनता यानी संपूर्ण निर्अहंकारता! अधीनता तो बहुत अच्छी वस्तु है। हमारे साथ जो है, वो कहे वैसा हमें (दादाश्री को) करना है। हमारा कोई अभिप्राय नहीं होता। यदि हमें ऐसा लगे कि अभी भी उनकी बात में थोड़ी कचाई है, तब हम उन्हें कहते हैं कि, 'भाई, ऐसा करो।' फिर हम अधीन ही रहते हैं, निरंतर।

साहजिकता, ज्ञानी की

ये हमारी साहजिकता है। साहजिकता में कोई हर्ज नहीं होता। किसी भी प्रकार की कोई दख़ल ही नहीं होती न। आप यदि ऐसा कहो तो ऐसा, और वैसा कहो तो वैसा। *पोतापणा* नहीं है न! और आप *पोतापणा* छोड़ दो ऐसे थोड़े ही हो? हमें तो, 'गाड़ी में जाना है' ऐसा कहे, तो ऐसा। और यदि दूसरे दिन वह कहे कि 'ऐसे जाना है', तो वैसा। 'नहीं', हम ऐसा नहीं कहते। हमें कोई हर्ज ही नहीं होता। हमारा खुद को कोई मत ही नहीं होता। उसे साहजिकपन कहा जाता है। पराये के मत के अनुसार चलना, वही साहजिकपन।

हम में साहजिकता ही होती है, निरंतर साहजिकता ही रहती है। एक क्षण भर के लिए भी साहजिकता के बाहर नहीं जाते। हमें *पोतापणा* नहीं होता, इसलिए कुदरत जिस तरह रखे उस तरह रहते हैं। *पोतापणा* छूटे नहीं तब तक कैसे सहज हो सकते हैं? *पोतापणा* को छोड़ दें तो सहज हो सकें। सहज हुआ इसलिए उपयोग में रह सकता है।

ज्ञानी, पोतापणा रहित

पोतापणा अर्थात् मैं हूँ और यह मेरा है! ज्ञानी को *पोतापणा* नहीं है, मतलब यह शरीर, वह भी खुद का नहीं है। ये शरीर ही खुद का नहीं है इसलिए शरीर से जुड़ी हुई कोई भी चीज़ मेरी नहीं है। ये मन मेरा नहीं है, ये वाणी मेरी नहीं है। ये जो बोल रहा है न, वह वाणी भी मेरी नहीं है, यह ऑरीजीनल टेपरेकार्ड बोलता है। वह वक्ता है, आप श्रोता हो और मैं ज्ञाता-दृष्टा हूँ। ऐसा हम तीनों का व्यवहार है। वाणी के हम मालिक नहीं हैं। इस शरीर के हम मालिक नहीं हैं। इस मन के हम मालिक नहीं हैं।

नहीं आंक सकते ज्ञानी को किसी गणित से

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने के बाद सारा *पोतापणा* उड़ा दिया।

दादाश्री : उड़ा नहीं सकते न? मैं किस लिए उड़ाऊँ? अपने आप ही हो गया।

प्रश्नकर्ता : आप अपनी सीट पर बैठ गए इसलिए वो सबकुछ अपने आप उड़ गया।

दादाश्री : मैं बैठा ही नहीं हूँ। ज़रा -सा आराम करने गया था, और तब मेरे साथ जो था उससे कहा कि *चोविहार* (सूर्यास्त से पहले भोजन करना) के बर्तन जाकर धो आओ। गाड़ी में ही *चोविहार* कर लिया था। लेकिन वह (ज्ञान) तो अपने आप ही हो गया। लोग मुझसे पूछते हैं कि, किस तरह हुआ? मैंने कहा कि क्या ये कोई गणित है, ये सारा? धीज़ इज़ बट नेचरल (यह कुदरती है)! ये इफेक्ट (परिणाम) है, कॉज़ (कारण) नहीं है!

प्रश्नकर्ता : आप कहते हो न, कि 'ज्ञान होने से पहले ही मुझे *पोतापणा* बिल्कुल भी सहन नहीं होता था, वह सीट...'

दादाश्री : ज्ञान हुआ और वह *(पोतापणा)* उड़ गया। *पोतापणा* सहन ही नहीं होता था एक सेकन्ड के लिए भी। सुख हो या दुःख हो, अरे, सबकुछ कड़वे ज़हर जैसा लगता था।

प्रश्नकर्ता : खुद की सीट मिल गई इसलिए फिर उसकी (*पोतापणा* की) जलन बंद हो गई।

दादाश्री : मेरा तो ऐसे ही उड़ गया था। कोई खोट निकालनी ही नहीं पड़ी। लोग पूछते हैं कि, दादाजी, किस तरह ये सबकुछ हुआ? तुम्हें क्या ये गणित जैसा लगता है? सीधा ही अंदर बिठा देते हैं। अक्रम विज्ञान से, क्रम-व्रम नहीं। होगा न अब?

पोतापणा नहीं हो, वहाँ काम बनता है

प्रश्नकर्ता : यह जो सिद्ध हुई हक़ीक़त है, वो सिद्ध हुई हक़ीक़त के जो ऋषिमुनि थे वो अभी हमारे पास नहीं हैं।

दादाश्री : वह सिद्ध की हुई वस्तु कैसी है कि सहज है, सुगम है, लेकिन उसकी प्राप्ति दुर्लभ है। क्योंकि, ऐसे प्राप्त पुरुष मिलने चाहिए तब उसकी प्राप्ति होती है। प्राप्त पुरुष कैसे होते हैं? खुद मुक्त पुरुष होते हैं, स्वतंत्र पुरुष होते हैं, जिन्हें संसार का एक भी विचार नहीं आता, खुद के अस्तित्व संबंध में एक भी विचार नहीं आता, *पोतापणा* जिसमें नहीं होता। *पोतापणा* नहीं हो, वहाँ काम बन सकता है।

आपके जैसा कोई मेरे पास आए, और कहे कि 'शक्कर मीठी है, ऐसा हमें चखाओ।' इसलिए फिर मैं उनके मुँह में रख देता हूँ, कि 'धीज़ इज़ धेट (यह वो है)।' तब से वो फिर निरंतर आत्ममय हो गया, फिर एक क्षण के लिए भी इधर-उधर नहीं! निरंतर आत्ममय, चौबीसों घंटे, संपूर्ण जागृति! पूरा जगत् खुली आँखों से सो रहा है। सिर्फ तत्त्व विचारकों को ही इसमें से बाद करते हैं, बाकी पूरा जगत् खुली आँखों से सो रहा है।

ज्ञानी ही मेरा आत्मा

श्रीमद् राजचंद्र ने तो यहाँ तक कहा है कि, 'ज्ञानी पुरुष ही आपका आत्मा है।' क्योंकि वो देह से अलग हैं, इसलिए आपका आत्मा ही हुआ न! देह से भिन्नरूप में बरतते हैं। और *पोतापणा* नहीं है। *पोतापणा* नहीं है इसलिए वो ही आपका आत्मा। *पोतापणा*वाला तो क्या कहेगा? कोई कहे कि, 'आपको आज निकलना है।' तब कहे कि, 'नहीं, आज नहीं जाना है।' यानी, खुद के कहे अनुसार करता है! खुद के कहे अनुसार लोगों को करने के लिए कहता है। हम (दादाश्री) तो आपके कहे अनुसार चलते हैं, हम में *पोतापणा* नहीं है न!

पोतापणा जाना यानी क्या?

कई लोग तो ऐसा ही समझते हैं कि अब 'उनमें *पोतापणा* है ही नहीं, मेरापन है ही नहीं।' और वैसे तो कषाय में बरतते हैं। लीजिए!! बरतता है कषाय में और कहता है कि 'अब मुझमें *पोतापणा* नहीं रहा।' *पोतापणा* पर ही तो जी रहा है वो। उनका *पोतापणा* जाता नहीं। *पोतापणा* का जाना वह तो बहुत मुश्किल है। शायद दूसरे सभी गुण आएँ हों, लेकिन *पोतापणा* नहीं जाता। *पोतापणा* ऐसे ही चला जाता होगा क्या? हम्, हम् करना तो वो छोड़ता नहीं है।

पोतापणा का जाना, मतलब क्या? किसी भी बात का मत नहीं होता। और आप तो, सब लोग कहते हैं वैसा ही करते हो या भीतर आपका मत अलग होता है।

प्रश्नकर्ता : अलग होता है। शोर उठता है।

दादाश्री : उसे ही *पोतापणा* कहते हैं। हमारा तो किसी भी प्रकार का शोर ही नहीं होता। हमसे कहे कि, 'दादाजी, वहाँ पर बैठ जाइए।' तो हम वहाँ बैठ जाते हैं। हमें वहाँ बैठना पसंद नहीं हो तो भी बैठ जाते हैं।

बिना पोतापणा के

बात थोड़ी समझ में आई या नहीं? आप जिस अर्थ में पूछना चाहते हो उस अर्थ में समझ में आया या नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझ में आया, दादाजी। लेकिन व्यवहार में तो व्यक्ति जीवित होता है, तब वो क्या इस तरह बरतता है? कोई व्यक्ति *पोतापणा* निकालकर बरतता है?

दादाश्री : *पोतापणा* निकाल नहीं देना है। *पोतापणा* अपने आप ही निकल जाता है। यदि निकाला हुआ हो, तो फिर वहाँ एडजस्टमेन्ट नहीं लिया जाता। दूसरे सभी कारण उल्टे हो जाते हैं। मतलब जैसे-जैसे कषाय कम होते जाते हैं, वैसे *पोतापणा* जाता रहता है।

शौक पोतापणा का

प्रश्नकर्ता : सामान्य तौर पर *पोतापणा* और कौन-कौन सी बाबतों में कहलाता है?

दादाश्री : यदि आपको आइसक्रीम खाना हो और आपको आइसक्रीम देने के बाद कोई उसे वापस ले ले तो आपका *पोतापणा* आपको दिखता है। आपकी घड़ी कोई छीन ले, तो उस समय आपका *पोतापणा* दिखता है। इस प्रकार, हर एक वस्तु में आपका *पोतापणा* आपको खुला दिखता है।

पोतापणा के शौक छूट जाएँ, तो *पोतापणा* छूट जाता है। जब तक शौक है तब तक क्या वो छूटेगा?

प्रश्नकर्ता : ये समझ में नहीं आया। सारे शौक छूट जाए तब, या *पोतापणा* का शौक छूटे तब?

दादाश्री : सिर्फ *पोतापणा* का शौक छूटे, तब। दूसरे सभी शौक नहीं छूटे तो कोई हर्ज नहीं है। *पोतापणा* का शौक बहुत ज़्यादा होता है। 'मेरे कहे मुताबिक ही करना पड़ेगा', कहेगा।

पोतापणा यानी धार्युं (मनमानी) करवाना

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* का शौक यानी उसमें खुद का *धार्युं* करवाना, वह?

दादाश्री : *पोतापणा* यानी *धार्युं* करवाना, ऐसा नहीं। *धार्युं* करवाने का भी शौक, ऐसा भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो?

दादाश्री : *पोतापणा*! पूरे जगत् में सबको होता है। *पोतापणा* जाए तो भगवान हो गए कहलाएँ। जिसे *पोतापणा* नहीं, वो भगवान! आप सबको 'ज्ञान' दिया है, किन्तु आपके पास *पोतापणा* तो है ही। जब आपके पास *पोतापणा* नहीं होगा उस दिन आप भगवान ही हो गए। अभी भी भगवान ही हो, पर पूरी तरह से बने नहीं हो, क्योंकि आपको *पोतापणा* है। किन्तु जब *पोतापणा* नहीं रहेगा तब आप भगवान हो गए होंगे।

बुद्धि देती है आधार पोतापणा को

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ये *पोतापणा* किस आधार पर रह जाता है? *पोतापणा* जो रह जाता है, उसका आधार क्या है? कौन-से आधार पर वो रह जाता है?

दादाश्री : बुद्धि की वजह से। बुद्धि उससे कहती है कि अपना इतना अच्छा छोड़कर उस ओर क्या काम है? अरे मुए, ऐसा नहीं बोलना चाहिए। ये तो *पोतापणा* कहलाता है। बुद्धि के कहे अनुसार चलता है। वह तो जब 'मैं चंदू' था तब तेरी बुद्धि थी। मतलब पिछली सत्ता छोड़ता नहीं है। कोई कहे, 'ऐसा मत करना।' तो कहेगा, 'मैं तो करूँगा।'

प्रश्नकर्ता : बुद्धि भ्रम में डाल देती है, पिछली जो सत्ता है वो छूटती नहीं है। वो उसे छोड़नी नहीं है।

दादाश्री : कर्त्तापन छूट गया ऐसा उसे मन में लगता है, किन्तु फिर भी मन में मानता है कि, ये तो मेरा है और अच्छे-अच्छों को मैं पीछे छोड़ सकता हूँ। पहले स्पर्धा की थी न, उस वजह से ये अड़चन आती है। अभी भी स्पर्धा रह जाती है। इसलिए अपने लिए तो अब *पोतापणा* यानी क्या? कि मैं चंदू ही नहीं हूँ, उसका और मेरा अब क्या लेना-देना रहा?

पहले की जो आदतें पड़ी होती हैं न, वो आदतें अभी भी चालु रहती है। आदत भले ही चालु रहे, उसमें हर्ज नहीं है, किन्तु देह को आदत रहनी चाहिए। उसके बजाय खुद आदतों को सँभालता रहता है। उन आदतों को गिर जाने नहीं देता।

बुद्धि गई कि पोतापणा मिटे

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* और बुद्धि के बीच क्या संबंध होता है?

दादाश्री : बुद्धि है तब तक ही *पोतापणा* है, 'मैं हूँ', वह बुद्धि। बुद्धि गई कि *पोतापणा* मिट जाता है।

बुद्धि वह *पोतापणा* सूचित करती है। जैसे-जैसे *पोतापणा* जाता है, जैसे-जैसे वो कम होता जाता है, वैसे बुद्धि कम होती जाती है।

प्रश्नकर्ता : सम्यक् बुद्धि होने पर *पोतापणा* जाता है?

दादाश्री : नहीं, सम्यक् बुद्धि होने पर *पोतापणा* चला तो नहीं जाता, किन्तु ऐसा होने पर फिर *पोतापणा* का ज़्यादा रक्षण नहीं करता। *पोतापणा* कब जाता है? पूरी तरह से बुद्धि बिदाई ले तब।

प्रश्नकर्ता : यानी सम्यक् बुद्धि भी चली जाए तब?

दादाश्री : हाँ। जब तक बुद्धि होती है तब तक *पोतापणा* छोड़ता नहीं है न! और जब तक बुद्धि है तब तक बुद्धि भेद करवाती है न! *पोतापणा* जाए तो अभेद हो सकते हैं। *पोतापणा* गया मतलब जुदाई चली गई।

फ़र्क़, मेरापन और पोतापणा में

प्रश्नकर्ता : मेरापन और *पोतापणा,* इन दोनों में क्या फ़र्क़ होगा?

दादाश्री : मेरापन ममत्व को सूचित करता है और *पोतापणा* तो ऊँचा अहंकार है, बड़ा अहंकार है। ये कोई नोमिनल (सामान्य) अहंकार नहीं है।

'ज्ञान' लेने के बाद 'मैं' और 'ममता' 'आपने' छोड़ दिए हैं। किन्तु *पोतापणा* नहीं छोड़ा है। आपके 'मैं' और 'ममता' छूट गए हैं उसमें कोई शक नहीं है। क्योंकि, (चीज़-वस्तुएँ) खो जाने के बाद आप चिंता नहीं करते। ममता किसे कहते हैं? खो जाने के बाद चिंता करता है, उसे ममता कहते हैं। मतलब आपका 'मैं' और 'मेरा' चला गया है, फिर भी *पोतापणा* रहा है।

'में' और 'मेरा' गया, पर पोतापणा रहा

अहंकार और ममता चले गए उस बाकी के हिस्से को हम '*पोतापणा*' कहते हैं अब।

प्रश्नकर्ता : क्या *पोतापणा* यानी इन्डिविज्युएलिटि? मैं दूसरों से कुछ अलग हूँ, ऐसा?

दादाश्री : 'इन्डिविज्युएलिटि' तो गई। 'मैं' और 'मेरा' दोनों चले गए। किन्तु *पोतापणा* रहा है। क्योंकि, कोई चाहे जितना क्रोध करे, चाहे जितना अपमान करे, आमने-सामने लड़-झगड़कर भी अंत में वो रात को उसका *निकाल* लाकर सो जाता है। अंत में तो वो *निकाल* लाता है। मतलब अहंकार चला गया है वो पक्की बात है। वर्ना अहंकार तो सारी रात उस बात को चलाता है। और ये तो कभी थोड़ा लड़ाई झगड़ा करे, किन्तु (अंत में) *निकाल* लाता है न? अहंकारवाला *निकाल* नहीं लाता। वो आगे बैर बढ़ाता ही रहता है। और ममतावाला तो जेब कटने के तीन दिन बाद भी चिल्लाता रहता है। कोई याद दिलाए, तब तुरन्त ही 'अरेरे, क्या करूँ?' ऐसा करता है। और आपका (महात्माओं का) तो गया मतलब गया। मतलब अहंकार और ममता दोनों गए हैं, *पोतापणा* रहा है। उसे देखो न!

तभी तो कृपालुदेव ने कहा है न कि, 'ज्ञानी पुरुष' में *पोतापणा* नहीं होता। कृपालुदेव ने '*पोतापणा*' शब्द लिखा है, कुछ भारी लिखा है। आपको क्या लगता है? कृपालुदेव ने ये अच्छा शब्द लिखा है न! अब इसे कौन समझाए? जिस अर्थ में कहना चाहते हैं वो अर्थ यहाँ कौन समझा सकेगा?

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानी पुरुष' समझा सकते हैं न।

दादाश्री : हाँ। क्योंकि किसी और की बिसात ही नहीं है न!

प्रकार पोतापणा के

प्रश्नकर्ता : दादा, *पोतापणा* के लिए आपने कहा है कि *पोतापणा* दो प्रकार से होता है, एक तो आक्रमण स्वरूप में, दूसरा रक्षण स्वरूप में। उसका स्पष्टीकरण करीए।

दादाश्री : तुम्हें *पोतापणा* छोड़ने की इच्छा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : किन्तु पहले तो जब हमसे किसीको दुःख लगना बंद होगा उसके बाद वो परतें जाएगी।

प्रश्नकर्ता : कौन-सी परतें?

दादाश्री : *पोतापणा* की और दूसरी सारी परतें। '*पोतापणा*' करते तो हैं, किन्तु वो भी 'अटेक'वाला *पोतापणा*। 'रक्षण'वाला *पोतापणा* अलग है और 'अटेक'वाला *पोतापणा* अलग है।

प्रश्नकर्ता : ये तो बहुत बड़ी बात निकली। एक 'रक्षण'वाला और दूसरा 'अटेक'वाला।

दादाश्री : हाँ। 'अटेक'वाला जाए उसके बाद 'रक्षण'वाला आता है। तब असली *पोतापणा* कहलाता है। वर्ना तब तक तो उसे हिसंकभाव ही कहते हैं। 'अटेक'वाला *पोतापणा* छूटे, उसके बाद 'रक्षण'वाला *पोतापणा* छूटने की शुरूआत होती है।

प्रश्नकर्ता : 'अटेक'वाला *पोतापणा* के बारे में ज़रा ज़्यादा समझाइए न!

दादाश्री : किसीको दुःख हो ऐसा *पोतापणा* किस काम का? *पोतापणा* खुद की प्रकृति का रक्षण करने में होता तो अलग बात है। उसे *पोतापणा* कहते हैं। लेकिन, किसीको दुःख हो, उसे तो *पोतापणा* भी नहीं कहते।

लोगों का *पोतापणा* तो अभी कैसा है? प्रकृति का रक्षण करने की बात तो है ही, पर 'अटेक' भी करता है, सामनेवाले पर प्रहार भी करता है। मतलब ये जो बड़ा *पोतापणा* है उसे निकालना है न! प्रकृति का रक्षण करना, ऐसा *पोतापणा* क्या अपने महात्मा करते होंगे? इसलिए ही सहज नहीं होता है न। और ये तो कोई ज़रा-सा अपमान करे, कि रक्षण करता है, ज़रा-सा और कुछ करे तो रक्षण करता है। ये सब सहजपन को आने ही नहीं देता न!

प्रकृति का रक्षण, वही पोतापणा

पोतापणा को हमने क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : प्रकृति का रक्षण करे, वही *पोतापणा*।

दादाश्री : तो फिर प्रकृति का रक्षण करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हम तो देखनेवाले हैं, करना क्या और नहीं करना क्या?

दादाश्री : हाँ। 'देखनेवाले' को तो *पोतापणा* होता ही नहीं है न! किन्तु ये तो जो अभी भी प्रकृति का रक्षण करते हैं, उनके लिए ये बात है।

यदि आप इस तरफ़ से जा रहे हों और थोड़ी दूर जाने के बाद कोई कहे, 'नहीं, उस तरफ़ से जाना है', उस वक्त भीतर झटका लगता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : उसे ही प्रकृति का रक्षण कहते हैं। वर्ना, उतनी ही 'स्पीड' से वो उस तरफ़ मुड़ जाता। वैसी ही 'स्पीड' से वैसे ही 'टोन' से (भाव से) और वैसे ही 'मुड' (मिज़ाज) से। जो 'मुड' पहले था न, वही का वही 'मुड'। ये तो मैंने अंतिम दशा की बात कही।

या फिर अभी कहीं गाड़ी से जाना हो और आपसे कहे, 'आओ'। और बिठाने के बाद दूसरा कोई कहे कि, 'यहाँ से उतरो, अभी कोई दूसरा आनेवाला है।' उस वक्त आप क्या करते हो? बैठे रहते हो न? 'नहीं उतरुँगा' ऐसा कहते हो न?

प्रश्नकर्ता : नहीं। खुद उतर जाता है।

दादाश्री : तुरन्त उतर जाता है?

प्रश्नकर्ता : तुरन्त ही। उतर ही जाएगा न!

दादाश्री : 'नहीं उतरूँगा', ऐसा नहीं कहता? यदि फिर आगे थोड़ी दूर जाने के बाद फिर कोई बुलाए कि, 'आ जाओ', तो वापस आ जाता है न? चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आता न?

मतलब मैं क्या कहता चाहता हूँ, कि ऐसा नौ बार रहे तो मैं कहूँ कि तू 'दादा' बन गया, जा। ऐसा नौ बार करे, और नौ बार उतर जाए, और नौ बार उतारनेवाले को भी तू कर्त्ता नहीं माने, बुलानेवाले को भी कर्त्ता नहीं माने, 'व्यवस्थित' को ही कर्त्ता माने। और वापस बुलाए तो भी मन में कुछ भी नहीं, हँसते-हँसते वापस आना है और हँसते-हँसते उतरना है, फिर देखो कैसा मज़ा आता है! तब उसे क्या कहते हैं? कि ये भाई प्रकृति का रक्षण नहीं करते इसलिए इनका *पोतापणा* चला गया।

खुद प्रकृति का रक्षण करना, पुद्गल का रक्षण करना वो *पोतापणा* है। जिस प्रकृति से छूटना है उसी प्रकृति का रक्षण करते हैं।

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* छोड़ना नहीं है और *पोतापणा* छोड़े बगैर वस्तु प्राप्त करने की बात करता है, ये कैसे संभव है?

दादाश्री : हाँ, इसलिए हम क्या कहते हैं कि *पोतापणा* छूट जाए तो अपने आप सब चलता रहे ऐसा है। बिना काम के क्यों पकड़ के रखता है? छोड़ दे न! पर वो छोड़ता नहीं न! कहेगा, 'ऐसा हो जाएगा और वैसा हो जाएगा।'

ये 'ज्ञान' लिया इसलिए 'खुद' आत्मा बन गया। 'प्रकृति मेरी नहीं है' ऐसा कहता है, किन्तु फिर वापस क्या करता है? प्रकृति का रक्षण करता है। प्रकृति का रक्षण करने में बहादुर। करता है या नहीं? क्या कोई नहीं करता? रक्षण करते होंगे न?

प्रश्नकर्ता : रक्षण ही करते हैं न!

दादाश्री : क्या बात करते हो! रक्षण करते हैं! रक्षण हो जाता है उसे ही जानना है। जानने लगें इसलिए अपने आप धीरे-धीरे सब छूटता जाता है। एकदम से छूट जाए, ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। एकदम से कुछ नहीं होता। उसे जानने से धीरे-धीरे छूटता रहता है।

पोतापणा और कपट के सूक्ष्म भाग

प्रश्नकर्ता : खुद की प्रकृति का रक्षण करना, ये *पोतापणा* में जाता है या कपट में जाता है?

दादाश्री : प्रकृति का रक्षण वह तो दोनों का अधिकार है। ये तो प्रकृति का रक्षण, पुरुष भी करते हैं और स्त्रीयाँ भी करती हैं, दोनों करते हैं।

प्रश्नकर्ता : मतलब *पोतापणा* में जाता है या कपट में जाता है?

दादाश्री : *पोतापणा* में जाता है। वो सब कपट में कब जाता है, जब स्पेश्यालिटी (विशेषता) हो तब। प्रकृति का रक्षण करे तो *पोतापणा* में जाता है। खुद प्रकृति का रक्षण करता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, स्पेश्यालिटी का समझ में नहीं आया, ये क्या कहा?

दादाश्री : ज़रूरत नहीं हो फिर भी तृतियम करके खुद का स्वार्थ निकालने के लिए करता है।

पोतापणा में मुझे हर्ज नहीं है। प्रकृति आई तब से *पोतापणा* होता ही है।

दान के समय भी पोतापणा?

इन भाई साहब ने जो बातें की वो तूने सुनी? जब ये भाईसाहब बात कर रहे थे, तू सुन रहा था?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : क्या बात कर रहे थे? कि यहाँ पर दान देने की उनकी भावना हो रही है। तब मैंने मना किया। मैंने कहा कि आपने बहुत सारा दिया है। अब नहीं। इतना तो उन्होंने दिया है, इसलिए मैंने कहा अभी बंद रखो, अभी मत देना। तो कहते हैं, 'मुझे देने हैं।' अब ये कपट में जाता है या किस में जाता है? *पोतापणा* में जाता है। अब यहाँ पर *पोतापणा* रहता है, क्योंकि यहाँ तो वो खुद आत्मा हो गया है फिर भी *पोतापणा* रहता है। यदि आत्मा नहीं हुआ होता तो किसमें जाता?

प्रश्नकर्ता : *पोतापणुं* में।

दादाश्री : *पोतापणा* में ही जाता है। उससे उसका पुण्य बँधता है। और उतना लोगों के पास से ले लें तो पाप बँधता है। हम मना करते हैं फिर भी उनको दान देना है। और कई लोग तो कहने पर भी नहीं देते। इसका क्या कारण है? इसके लिए कौन उसे रोकता होगा?

प्रश्नकर्ता : वही, *पोतापणा*!

दादाश्री : नहीं। *पोतापणा* तो सबमें होता ही है, *पोतापणा* तो सबमें कोमन होता है। किन्तु ये तो लोभ की ग्रँथियाँ हैं। एक रुपया भी देना हो तो नहीं दे सकता। इसलिए भगवान ने कहा है न कि लोभ की ग्रँथि तोड़ना, वर्ना मोक्ष में किस तरह जाएगा? क्योंकि चित्त उसमें ही होता है। वहीं का वहीं होता है चित्त।

एक भाई कह रहे थे कि, 'मुझे जैन भागीदार मिल गए, इसलिए फिर उनके संस्कार से मेरे सारे विचार बदल गए। वर्ना पहले मैं दान नहीं दे पाता था।' अब प्रकृति तो यही है न (लोभवाली)? किन्तु इसमें कपट नहीं है, इसमें कुछ और है। तो उसे क्या कहते हैं? *पोतापणा* कहते हैं।

पकड़, वही पोतापणा

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* होना और किसी भी वस्तु की पकड़ होना, मतलब उस वस्तु को छोड़े ही नहीं, उन दोनों में फ़र्क है?

दादाश्री : उसे बहुत सख़्त (गाढ़) *पोतापणा* कहते हैं, ऐसा *पोतापणा* तो व्यक्ति को मार डालता है। *पोतापणा* कम (हल्का) हो तो उसे देखते रहने से छूटता जाता है। वर्ना *पोतापणा* छोड़े नहीं, तो उसका कोई अंत ही नहीं आता न!

प्रश्नकर्ता : और पकड़ होती है उसे तो व्यक्ति देखता ही नहीं है न, उसे....

दादाश्री : वो तो मार ही डालती है! उसे ही आपघाती स्वभाव कहते हैं। आत्मा का घात किया कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : आपने तो इस विज्ञान से हम सबकी पकड़ों को छुड़वा दिया, पता नहीं चले उस तरह छुड़वा दिया।

दादाश्री : हाँ, जिसकी पकड़ें उड़ गई उसका तो काम बन गया न! चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भान रहे न तो बहुत हो गया। (फिर भले) परिस्थिति चाहे जैसी हो।

मैल वही पोतापणा

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपके पास हम आए, और आपके पास आने से हमें बहुत फ़ायदा भी हुआ है, किन्तु एक चीज़ हम समझते हैं कि अभी भी हमारे अंदर से *पोतापणा* और विशेषता गए नहीं हैं।

दादाश्री : *पोतापणा* और विशेषता क्या है? तब कहे, मैल। साबुन और कपड़ा दोनों के मिलने से मैल हटता है। मतलब *पोतापणा* मैल है, वो तो धीरे-धीरे हटेगा। जैसे-जैसे कपड़े पर साबून रगड़ा जाएगा और घिसाई होगी, वैसे-वैसे मैल चला जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वो तो ठीक है दादाजी। हमारा पूरा प्रयत्न... वो तो हो जाता है। विशेषता चली गई। किन्तु कभी-कभी ऐसा तर्क होता है, कि कभी किसी बाबत में दिशासूचन (मार्गदर्शन) या ऐसा कुछ नहीं हो तब उस वक्त *पोतापणा* या विशेषता भी अंदर से निकल आती है।

दादाश्री : वो निकलता है। भले ही निकले, निकलने से घिस जाएगा। क्योंकि...

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपकी प्रत्यक्षता में निकले तो फिर सबकुछ निकल जाएगा, किन्तु क्या बाद में भी निकल जाएगा?

दादाश्री : वास्तव में तो *पोतापणा* निकलता ही नहीं है। कोई भी ऐसा उपाय नहीं है, जिससे *पोतापणा* निकले। ये *पोतापणा* अपने यहाँ (ज्ञान लिया हो तो) निकले ऐसा है। क्योंकि अपना विज्ञान ही ऐसा है, कि जो *पोतापणा* को निरंतर घटाता ही रहता है। क्योंकि अपने इस विज्ञान ने अहंकार को दूर कर दिया है। वहाँ तो (क्रमिक में) अहंकार को घटाते रहते हैं। यहाँ पर *पोतापणा* को घटाते हैं। वहाँ क्या करते हैं? दिन-रात अहंकार को घटाते हैं। उसे घिसते रहते हैं। फिर भी आख़िर में शाम को रकम

बचती है। चालीस प्रतिशत, पचीस-तीस प्रतिशत, बीस प्रतिशत भी रकम बचती है (थोड़ा-सा अहंकार तो बाकी रहता ही है)!

अंधा पोतापणा

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने जो कहा वो सही है। वो *पोतापणा* जो होता है न, उस *पोतापणा* की वजह से दूसरे किसीकी बात स्वीकारने को हम तैयार नहीं होते थे।

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : और वो *पोतापणा* भी कितना ज़्यादा! कि फिर हमें ऐसा लगता है कि मृदुता और ऋजुता जैसे कोई गुण ही नहीं है।

दादाश्री : भगवान ने *पोतापणा* निकालने को कहा, और लोगों ने उसे मज़बूत किया, इतना ही काम किया है। साधारण मनुष्य को *पोतापणा* ढीला होता है। किन्तु ये तो मज़बूत।

प्रश्नकर्ता : बहुत मज़बूत। अब आपने जब कहा तब मेरी समझ में आया कि उपादान बढ़ा हो और यदि *पोतापणा* हो, तो वह व्यक्ति उल्टे मार्ग पर चला जाता है।

दादाश्री : क्या कहा?

प्रश्नकर्ता : उपादान बहुत अच्छा हो और *पोतापणा* भी हो, ऐसा हो तो वे उल्टे मार्ग पर चले जाते हैं।

दादाश्री : यही तो मैं भी कहता हूँ, कि जागृति और उपादान हों और उसमें 'मैं कुछ जानता हूँ' (हुआ कि) आत्मा दूसरी तरफ़ चलने लगता है।

पोतापणा अंधा होता है। अंधे को पता नहीं चलता कि ये (मैं किसका ले रहा हूँ) मेरी गलती है या सामनेवाले की गलती है वो भी पता नहीं चलता। उसे खुद की भूल नहीं दिखाई देती। इसलिए कृपालुदेव का वाक्य याद रखें तो कल्याण हो जाए, 'दीठा नहीं निजदोष तो तरिए कोण उपाय?' मतलब, तुम्हारे दोष दिखाई नहीं देते, तो पार उतरने का मार्ग ही कहाँ है!

आदतों के रक्षण से टिका पोतापणा

प्रश्नकर्ता : देह की, *मंगलदास* की जो-जो आदतें हैं, उन आदतों का खुद रक्षण करता है।

दादाश्री : बचाव करता है, बचाव। कोई कहेगा 'आपने खाया?' 'नहीं, मैंने नहीं खाया है।' अब खुद जानता है कि खाया है, फिर भी मना करता है। उसे तो कहना चाहिए कि ऐसा-ऐसा हुआ है। समझ में आ रही है मेरी बात? इस वजह से (रक्षण की वजह से) *पोतापणा* रह गया है।

प्रश्नकर्ता : रक्षण करने से *पोतापणा* रह जाता है।

दादाश्री : सभी बातों में रक्षण ही करता है। उसे पता नहीं है, वर्ना तो वो रक्षण करना छोड़ देगा। उसे पता नहीं है, और यदि कोई समझाए कि ये तो भूल हो रही है, और उसे ये बात ख़्याल में रहे तो हमेशा के लिए *पोतापणा* छूट जाएगा। किन्तु ये ख़्याल में नहीं रहता, ऐसी वस्तु है यह। क्योंकि इसमें उसे मीठास लगती है। इसलिए छोड़ता नहीं है। जैसे कि मुँह में मीठास लगती है इसलिए मीठा नहीं छोड़ता है। मतलब, मीठास की वजह से उसे भान नहीं आता, बेभान हो जाता है।

ये कोई ज़्यादा सूक्ष्म या गहरी बात नहीं है। सब समझ में आता है, किन्तु अभी भी *पोतापणा* छोड़ना नहीं है। जानने (समझने) के बाद भी छोड़ने की इच्छा नहीं है। क्योंकि मीठा लगता है, उस घड़ी फिर सबकुछ भूल जाता है। ऐसा देखा है आपने?

प्रश्नकर्ता : हाँ....बहुत। मीठास ज़रा-सी भी छूनी नहीं चाहिए, वो मीठास चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : हाँ...

प्रश्नकर्ता : दादा, मैं ऐसा विचार कर रहा था।

दादाश्री : तय करना चाहिए। ऐसा तय करना चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : चंदूभाई से ऐसा कहना चाहिए कि मोक्ष चाहिए या ये (*पोतापणा*) चाहिए। यदि मोक्ष चाहिए तो फिर *पोतापणा* नहीं होगा और *पोतापणा* होगा तो फिर मोक्ष नहीं होगा। ऐसा हमें उनसे कहना चाहिए। फिर उनकी निशानीयाँ कैसी होने लगीं उसे देखना है। आपकी समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : निशानी मतलब क्या? कि क्या होनेवाला है ऐसा उनकी आदतों पर से पता चल जाएगा, यदि *पोतापणा* नहीं छोड़ें तो।

प्रश्नकर्ता : बहुत से लक्षणों पर से पता चल जाता है।

दादाश्री : हाँ, सामनेवाला ज़्यादा रक्षण करे तो फिर हम छोड़ देते हैं। समझ जाते हैं कि उसकी हेबीट (आदत) पड़ गई है (रक्षण करने की)।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। छोड़ देना ही अच्छा है न!

दादाश्री : मेरे लिए तो छोड़ देना ही अच्छा है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका तो छूटा हुआ ही है न!

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। आप यदि बात को बहुत खींचो तो फिर मैं उस बात को छोड़ देता हूँ, वही ज़्यादा अच्छा है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ दादाजी, हमें छोड़ देना चाहिए, किन्तु नहीं छूटे तो आप तो छोड़ ही देते हो न!

दादाश्री : नहीं, किन्तु मुझे छोड़ देना चाहिए या रहने देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप तो छोड़ ही देते हो न।

दादाश्री : इसलिए फिर आप वैसे के वैसे ही रहे। आपकी समझ में नहीं आया! मैं क्या कहना चाहता हूँ वह?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। समझ गया, मेरी समझ में आ गया।

पोतापणा छोड़कर करे तो!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, कई बार ऐसे भाव आते हैं कि मैं कुछ भी नहीं करता हूँ, ये सब तो दादा करवा रहे हैं। दादा के इन्स्ट्रुमेन्ट (साधन) हैं।

दादाश्री : हाँ, उसमें कोई हर्ज नहीं है, ये तो बहुत अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा करने से क्या कभी कोई गलती होती है?

दादाश्री : नहीं, कोई गलती नहीं होती।

अपने से, दादा का जगत् कल्याण का जो कार्य होता है वो हमने पकड़ लिया है। अब बहुत सारे कार्य अनुकूल प्राप्त हो गए हैं। अक्रम का आगे का भविष्य अच्छा होगा। किन्तु वो सब *पोतापणा* छोड़कर करे तो!

बिना पोतापणावाले की वाणी कैसी?

ऐसा है, ये 'ज्ञान' लिया इसलिए जो पूरा *पोतापणा* था, वो धीरे-धीरे पिघलते-पिघलते फिर धीरे-धीरे 'झीरो' (शून्य) हो जाता है। 'झीरो' हो जाए इसलिए फिर वो 'ज्ञानी' कहलाता है। फिर

उसकी वाणी में फ़र्क आ जाता है। *पोतापणा* जाने के बाद वाणी निकलती है। जितना *पोतापणा* घटता है उतनी वाणी उत्पन्न हो जाती है और वो वाणी सच्ची होती है! बाकी, तब तक सारी वाणी झूठी। बाहर तो, हमारा 'ज्ञान' लिए हुए लोगों के अलावा, दूसरी सभी जगह तो *पोतापणा* भी होता है और वाणी बोलते हैं। किन्तु वो वाणी तो हवा-पानी जैसी होती है (असरकारक नहीं होती), वाणी नहीं होती। उसे लौकिक कहते हैं। और हमारा 'ज्ञान' लिया हो उन्हें तो *पोतापणा* जाए उसके बाद ही (ज्ञान संबंधी) वाणी बोल सकते हैं, वर्ना बोल नहीं सकते।

हमारा 'ज्ञान' लिए हुए महात्माओं में से कोई एक व्यक्ति भी (ज्ञान संबंधी) अपना स्वतंत्र एक वाक्य बोल सकता है? नहीं। तब तक किसीने भी 'मूल वस्तु' को प्राप्त नहीं किया है। एक वाक्य भी नहीं बोल सकते। यदि एक वाक्य बोले न तो मैं स्तब्ध हो जाऊँ। बस, हो गया! तो मैं कहूँ कि 'बस, हो गया!' ऐसा एक ही वाक्य मेरे सुनने में आए न, तो मैं समझ जाऊँ कि, 'वाह! कहना पड़ेगा!' किन्तु ऐसा होता नहीं है न! वाक्य किस तरह निकलेगा? उसकी वाणी निकलेगी कैसे?

प्रश्नकर्ता : आपका कहा हुआ भी यदि पद्धति अनुसार कहते हों तो भी बहुत हो गया।

दादाश्री : यहाँ पर यदि पद्धति अनुसार कहते हों फिर तो सोने (स्वर्ण) जैसी बात है।

तब उद्‌भव होता है वचनबल

प्रश्नकर्ता : हमारी वाणी स्याद्‌वाद कैसे होगी?

दादाश्री : वाणी के कई नियम पालों तब वाणी स्याद्‌वाद होती है। कई रूप से वाणी को निर्मल रखें, तब वह वाणी वचनबलवाली होती है। वचन का कितने ही प्रकार से जतन किया हो तब वचनबल होता है।

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञान' लेने के बाद वचनबल आता है न?

दादाश्री : नहीं। 'ज्ञान' नहीं लिया हो तो भी वचनबल हो सकता है। जिसने वाणी के सारे नियमों का पालन किया हो, उसे भी वचनबल होता है। भले ही वो अज्ञानदशा में हो।

प्रश्नकर्ता : वो वचनबल तो व्यवहारिक होता है न? वो तो व्यवहार में काम आता है न?

दादाश्री : हाँ, बहुत काम आता है। वचनबल की तो बात ही कुछ और होती है। उसके जैसा कोई बल नहीं है। वचनबल से तो सारे युद्ध जीत सकते हैं। हथियारों से युद्ध नहीं जीत सकते।

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* जाए, तो वचनबल आता है?

दादाश्री : *पोतापणा* गया, तब तो भगवान हो गया। लेकिन *पोतापणा* जाता नहीं है। उसके पहले वचनबल आता है। वचन चोखे हुए उसके बाद वाणी मीठी होती है, फिर वचनबल उत्पन्न होता है।

कोने-कोने में पोतापणा की खेंच

प्रश्नकर्ता : दादा के पास आने के बाद दीवानखाने तो बहुत सारे लोगों के चोखे हो गए। किन्तु सारे कोनों में अभी भी कुछ अभिनिवेष हैं, कुछ ऐसा-वैसा सब भीतर भरा हुआ है।

दादाश्री : बहुत सारा चोखा हो गया है। चोखा तो हो गया न?

क्रमिक मार्ग में आचार संहिता के आधार पर पुरुषार्थ है और यहाँ अक्रम में आचार संहिता ये तो निकाल देने जैसी चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज की बात कर रहे हैं।

दादाश्री : डिस्चार्ज अर्थात् निकाल देने जैसी चीज़। नो वेल्यु, और वहाँ (क्रमिक में) संपूर्ण वेल्यु

है। उस पर सारा पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ के आधार पर भी यदि मन-वचन-काया की एकता हो तो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, किन्तु वहाँ मन-वचन-काया की एकता नहीं है इसलिए सारा...

दादाश्री : अब वो आचार सारे व्यर्थ हो गए।

प्रश्नकर्ता : सारे व्यर्थ, दिखावे के लिए सारे होते हैं।

दादाश्री : कीर्ति फल देती है। लोग यहीं का यहीं रोकड़ा (तुरन्त) भोग लेते हैं। खुश हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, मान-पान मिल जाता है।

दादाश्री : खुश हो जाता है, उसमें *पोतापणा* मान बैठा है, जो उसे ये सुख नहीं आने देता (आत्मा का सुख)।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उसकी वजह से वो सुख आवृत्त हो जाता है।

दादाश्री : मतलब जिस जगह पर *पोतापणा* मानकर बैठा है न! 'वो जगह मेरी नहीं है, ये मैं नहीं हूँ', ऐसा हमेशा के लिए हो जाए और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', बस। यों बदल दे, इतना ही सीखना है। वर्ना *पोतापणा* छोड़ देना है। मान बैठा है न! रोंग बिलीफ़ को! छूटना हो तो यही रास्ता है और कोई रास्ता नहीं है। *पोतापणा* की वजह से ये सारी *खेंच* (पकड़) है वर्ना *खेंच* होती होगी? वर्ना महावीर के मार्ग में *खेंच* होती है? भगवान तो बिना *खेंच*वाले हैं और यदि *खेंच* हो तो हमें कहना चाहिए कि, 'मेरी भूल हो गई।' सच्ची *खेंच* हो, एकदम सच्ची (मैं शुद्धात्मा हूँ, वो *खेंच*) तो भी कहना चाहिए कि 'मेरी भूल हो गई।' *खेंच* शब्द मतलब असत्य ही हो गया। पोइज़न हो गया। उसे छुड़वाने के लिए हम ये सब कहते हैं, हमें तो और कोई झँझट ही नहीं होती न! और नहीं छूटे तो फिर हमारे पास कब तक छुड़वाओगे? हम बार-बार कहाँ सिरफोड़ी करें? आप पूछो, तब उदय आने पर हम ऐसा बोलते हैं। उसका उदय आए, उदय आए तब, वर्ना बोल सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं बोल सकते।

होता है मज़बूत पोतापणा, पूजे जाने की कामना से

दादाश्री : धर्म का पुस्तक हाथ में आया और किसीने उसे बिठाया कि 'अब ये पुस्तक पढ़ो।' तब से उसे भीतर कामना उत्पन्न हो जाती है कि अब लोग मुझे पूजेंगे। तब यदि आपको पूजे जाने की कामना उत्पन्न हुई, तो आपको डिसमिस कर देना चाहिए। क्योंकि ज्ञानी पुरुष के पुस्तक को छूने के बाद कामना क्यों उत्पन्न हुई? अरे यदि कामना हो, तो भी नाश हो जानी चाहिए! लेकिन कामनाएँ उत्पन्न होती हैं। आपकी समझ में आता है कि लोगों को भीतर पूजे जाने की कामना खड़ी हुई है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर भीतर स्पर्धाएँ होती हैं! किसी और को लोग ज़्यादा पूजते हों तो फिर इसे अच्छा नहीं लगता। जैसे कि पूजे जाना ही मोक्ष हो, ऐसा मान लिया है इन लोगों ने! ये तो बहुत बड़ी जोखिमदारी है। बाकी, जिसे इस जगत् में किसीके साथ भी कहा-सुनी नहीं होती, उसे पूजना काम का है!

इन गुरुओं को तो पूजे जाने की कामनाएँ खड़ी होती है, गुरु होने की कामना रहती है। जब कि कृपालुदेव को ऐसी कामना थी कि 'परम सत् जानने का कामी हूँ!' और किसी भी चीज़ की (उन्हें) कामना नहीं है! मुझे तो पूजे जाने की कामना पूरी ज़िन्दगी में कभी भी नहीं हुई है। क्योंकि उसे तो बोधरेशन (बोझा) कहते हैं। अपने से कोई बड़े हो, तो उनको पूजने की कामना होनी चाहिए!

प्रश्नकर्ता : मान, पूजे जाने की कामना, गर्वरस ये सारी *पोतापणा* की महफिलें हैं न?

दादाश्री : ये सारी चीज़ें *पोतापणा* को मज़बूत करनेवाली हैं! और मज़बूत किया हुआ *पोतापणा* कभी तो झलकेगा न! तब लोग कहेंगे, 'देखो अपना असली रंग दिखाया न!' *पोतापणा* झलकने लगा तो फिर कभी भी बरकत नहीं आती! यानी फिर पूजे जाने की कामना छूटती नहीं है, अनादिकाल से ये भीख छूटी नहीं है।

सींचा पराये खेत को

पोतापणा निकालने के लिए तैयार हुए हैं या रक्षण करने के लिए तैयार हुए हैं? समझ में आता है न? नहीं आता? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : बराबर है, दादाजी।

दादाश्री : *पोतापणा* का रक्षण करने के ताक में रहता है। 'उसमें कोई बरकत नहीं है', ऐसा कहना चाहिए न! क्या करना चाहिए? कोई उसे ले जानेवाला है?

इसलिए मैं आप लोगों को सावधान करता हूँ, दूसरा कौन सावधान करेगा? रोज़-रोज़ भय सिग्नल बताने के बाद तो वहाँ पर निरंतर जागृति रहनी चाहिए। तुम्हारी समझ में आया? जागृति किसे कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : एक बार भय सिग्नल बताया हो तो वहाँ पर निरंतर जागृत रहे।

दादाश्री : भय सिग्नल में निरंतर जागृत ही रहे। दूसरी जागृति में कमज़ोर पड़ जाता है।

इतना तो आपको चौकस होना पड़ेगा न! या फिर मैं चौकस हो जाऊँ और आपका राह पर आ जाएगा?

प्रश्नकर्ता : ये तो बहुत ज़रूरी बात है।

दादाश्री : तो अब तक क्या कर रहा था? दूसरों के खेत में पानी जा रहा था। ये तो मैंने कहा कि 'दूसरों के खेत में पानी नहीं जाना चाहिए', वर्ना दूसरों के खेत में ही पानी जा रहा था। मान्यता मान ली थी। उसे पानी पिला रहा था। खुद का खेत और पराया खेत का फ़र्क बताया। ये तेरा खेत है और ये पराये खेत पानी पीते हैं।

तूने भी देखा कि पराया खेत है? अब पराए खेत को पानी नहीं पिलाना है, ऐसा तय किया? (खुद के खेत में) थोड़ा-सा पिलाने का शुरू हो गया? फिर वापस बाँध टूट जाए तो फिर पानी दूसरे खेत में घुस जाता है। अपने सारे खेत सूख गए होते हैं। इसलिए तो इतना ज़्यादा भय सिग्नल दिखाया....। एक ही बार बोला हो तो कभी भी भूलाया नहीं जा सकता।

उदयाधीन में पैठा पोतापणा

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* तो उदय आएगा तब दिखेगा?

दादाश्री : हाँ। इसलिए मैंने कहा न कि ज्यों-ज्यों उदय आते रहते हैं, त्यों-त्यों आत्मा का अनुभव आता रहता है, त्यों-त्यों अहंकार कम होता जाता है। ऐसे ये सब 'रेग्युलर' होता रहता है। फिर उसे अनुभव बढ़ता रहता है।

प्रश्नकर्ता : ये सब *फरजियात* (अनिवार्य) है।

दादाश्री : (डिस्चार्ज) *फरजियात* है। चारा ही नहीं है। वर्ना अगर काम पर नहीं जाए तो बीवी कहती है कि, 'क्यों बैठे हो अभी तक? कमाने जाओ।' ऐसा बोलती है। ये सब *फरजियात* है। सिर्फ यही *मरजियात* है (आत्मा का पुरुषार्थ)। वो करे तो ही काम होता है।

प्रश्नकर्ता : कर्म के अधीन कहलाता है?

दादाश्री : खुद के स्वाधीन नहीं, खुद का मत नहीं। *पोतापणा* मतलब वो तो खुद के मतवाला होता है न, कहेगा कि 'मुझे जाना पड़ेगा, नहीं चलेगा।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, वो सब निकल जाना चाहिए।

दादाश्री : हाँ। उसे खुद का मत कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : उसकी निर्जरा कैसे होती है?

दादाश्री : अभी भी *पोतापणा* जीवित है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उसका एन्ड (अंत) किस तरह आए?

दादाश्री : उदय के अधीन हुआ, यानी खत्म। जगत् के लोग (वास्तव में तो) उदय के अधीन हैं, लेकिन फिर उनमें *पोतापणा* भी है।

पोतापणा रहित व्यवहार, 'ज्ञानी' का

'ज्ञानी पुरुष' अपने उदय के अधीन ही बरतते रहते हैं। उसमें *पोतापणा* नहीं रखते। आसपास के सारे संयोग क्या काम करते हैं, उदय के अधीन ही सारे संयोग इकट्ठे होते हैं, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' इकट्ठे होते हैं, और उस आधार पर विचरते हैं।

प्रश्नकर्ता : वो तो, ये जो दरखास्त आई और उसका स्वीकार हुआ, उस अवसर पर हमने दादाजी का देखा, कि दादाजी को किंचित् मात्र भी *पोतापणा* नहीं है। और दादाजी हमेशा सामनेवाले व्यक्ति की ही अनुकूलता देखते हैं।

दादाश्री : आपका *पोतापणा* भी धीरे-धीरे चला जाएगा।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी पुरुष का हमने ऐसा देखा। इसलिए हमारा *पोतापणा* चला जाएगा?

दादाश्री : अहंकार चला गया है न! अहंकार होता है तब तक *पोतापणा* का रक्षण होता है। वो, ज्ञानी पुरुष का *पोतापणा* चला गया देखते हैं इसलिए उस अनुसार वो....

प्रश्नकर्ता : दादाजी ने कभी भी अपनी अनुकूलता नहीं देखी है, हमेशा सामनेवाले कि प्रतिकूलता देखकर उसे ही अनुकूल हो गए हैं। हर एक व्यक्ति हमेशा अपनी ही अनुकूलता देखता है। फिर भले ही दूसरे को चाहे जो भी प्रतिकूलता उत्पन्न हो। लेकिन मेरी अनुकूलता सँभाली जानी चाहिए। 'मेरा बिस्तर कहाँ है? मेरा खाना क्यों नहीं आया?'

दादाश्री : ये *पोतापणा* तो क्या करता है? यहाँ से कहीं जाना हो तो भी किसीका नहीं मानता, खुद का कहा ही करवाता है।

हिसाब चूकते होता जाए, उतना पोतापणा पिघले

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी उदय अधीन ही बरतते हैं, तो दूसरे सबका कैसा होता है?

दादाश्री : दूसरों को भी उदय अधीन होता है। किन्तु उनको भीतर *पोतापणा* रहता है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु आप कहते हो कि हर एक व्यक्ति उदयाधीन बरतता है। तो फिर उसमें उसे *पोतापणा* रखना हो तो रख सकता है क्या?

दादाश्री : *पोतापणा* ही रखता है।

प्रश्नकर्ता : क्या ये 'ज्ञान' लिए हुए महात्माओं के लिए है?

दादाश्री : महात्मा भी *पोतापणा* रखते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हम *पोतापणा* किस तरह रखते हैं?

दादाश्री : रहता ही है! रखते नहीं हो, रहता ही है! किन्तु अब धीरे-धीरे पिघलता जाता है।

जितने हमारे हिसाब चूकते होते हैं न, उतना *पोतापणा* पिघलता जाता है। जितना पिघल गया उतना *पोतापणा* फिर नहीं रहता। मतलब सभी को *पोतापणा* ही है न! *पोतापणा* रहता ही है। किन्तु 'ज्ञान' लिया है इसलिए इनका *पोतापणा* अभी पिघल रहा है।

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* रहे तो फिर 'चार्ज' होता है, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : नहीं। 'चार्ज' नहीं होता। ये *पोतापणा* 'चार्ज' हो ऐसा नहीं है। ये *पोतापणा* 'डिस्चार्ज' है, पिघल जाए ऐसा है।

पोतापणा से आवृत्त होती है जागृति

पोतापणा आनेवाला जन्म तय कर देता है और उदय अधीन इस जन्म में तय है।

प्रश्नकर्ता : तो हमें *पोतापणा* होता है, इसलिए अगला जन्म फिर खड़ा होता है न?

दादाश्री : नहीं, आपमें (महात्माओं में) *पोतापणा* हैं इसलिए आपकी थोड़ी जागृति कम हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : और जगत् के लोगों के लिए अगला जन्म खड़ा करता है?

दादाश्री : वह तो *पोतापणा* करके अगला जन्म चित्रित करता ही है। हमने लट्टू कहा। लट्टू की तरह रहते हों तो भी बहुत अच्छा। तो फिर *पोतापणा* नहीं होता न! चित्रित नहीं करता!

प्रश्नकर्ता : वो लट्टू, उदयकर्म के अधीन है।

दादाश्री : हाँ, उदयकर्म के अधीन है।

प्रश्नकर्ता : और उसमें फिर *पोतापणा* रखते हैं।

दख़ल छूटे तो छूटे पोतापणा

दादाश्री : *पोतापणा* छोड़ना नहीं है और दिन लंबा करना है (आत्म जागृति बढ़ानी है) ये कैसे हो सकता है? *पोतापणा* छोड़ना नहीं है। ज्ञानी पुरुष तो *पोतापणा* छोड़कर के बैठे होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने इतना सारा सुख चखाया। सबको थोड़ा-थोड़ा परिणाम भी मिलने लगा। तो फिर *पोतापणा* छोड़ने में, अंदर की ऐसी कौन-सी हरकतें बाधक होगी?

दादाश्री : एक तो, पुराना माल भरा हुआ है वो दख़ल करता है। फिर भी यदि दख़ल को छोड़ दें, दख़ल पर ध्यान नहीं दें, तो *पोतापणा* छूट जाता है। किन्तु दख़ल पर ध्यान देते हो। दख़ल मंजूर करते हो।

प्रश्नकर्ता : उसे ये दख़ल नहीं लगती, खुद दख़ल कर रहा है ऐसा उसे नहीं लगता।

दादाश्री : ऐसा लगता हो तो कल्याण हो जाए। किन्तु ऐसा भी नहीं लगता। ये तो जैसे कि घर के लोग हमें चाय-पानी के लिए बुलाएँ और साथ में बैठकर चाय पीएँ, उस तरह चल रहा है। दख़ल लगने लगे, उसकी तो बात ही अलग होती है।

दादा छुड़वाएँगे पोतापणा

प्रश्नकर्ता : किन्तु ये *पोतापणा* किस तरह छूटेगा?

दादाश्री : आपको *पोतापणा* छोड़ देना है? तो आपके पास रहेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : फिर तो कुछ रहता ही नहीं न! वास्तव में तो कुछ भी नहीं रहे, तो वो व्यवहार में भी अच्छा है। व्यवहार में भी अच्छा है, यदि *पोतापणा* से कोई लेना-देना नहीं हो तो।

दादाश्री : हाँ, लेना-देना नहीं हो तो व्यवहार में भी अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु वो लगाववाला नहीं चाहिए। जैसे जलकमल में जल और कमल अलग ही रहते हैं, फिर जैसे सेवा और जागृति अलग रहते हैं न, ऐसा अलग रहना चाहिए, उसके लिए क्या करना चाहिए और किस तरह हो सकता है?

दादाश्री : वो तो मैं कर दूँगा। आपका उससे कोई लेना-देना नहीं रहे ऐसा मैं कर दूँगा। *पोतापणा* चला जाए ऐसा कर दूँगा।

ज्ञानी की निकटता में जाए पोतापणा

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* निकाल देने के लिए ज्ञानी पुरुष के पास रहने के अलावा दूसरा कोई असरकारक उपाय नहीं है?

दादाश्री : सारे उपाय ज्ञानी पुरुष के पास रहने से ही हैं। ये सारे आप्तपुत्र साथ में रहते हैं इसलिए तो उनकी कमाई है न! सारा दिन यही सुनते रहते हैं न!

प्रकृति के रक्षण से रक्षा हुई पोतापणा की

मैं ऐसा नहीं कहता कि आपको अपनी प्रकृति का रक्षण नहीं करना है। लेकिन आपके मन में तो ऐसा होना चाहिए, ज्ञान का पक्ष तो रहना चाहिए। मैं वर्तन नहीं माँगता हूँ। वर्तन कब आता है? श्रद्धा-प्रतीति फ़िट हो जाए, उसके बाद वह ज्ञान परिणमित होता है। ज्ञान उसे दिन-ब-दिन अनुभव में आता जाए, तब वर्तन में आता है।

एक बार गाड़ी में से उतार दिया हो तो असर हो जाता है, फिर भीतर जब वो असर थोड़ी शांत होने लगती है तब ज्ञान याद आता है। ऐसे करते-करते ज्ञान फ़िट हो जाता है। पहले प्रतीति में आता है, फिर अनुभव में आते-आते तो पहले कभी-कभी ज्ञान में कच्चा भी पड़ जाता है, और फिर वर्तन में आता है। किन्तु थोड़ा-बहुत भी अनुभव में आया तो भी बहुत हो गया न!

एक-दो बार यदि गाड़ी में से उतरकर फिर बुलाने पर वापस बैठने आए, बिना चेहरा बिगाड़े, तो भी बहुत अच्छा कहलाता है। हाँ, वर्ना चहेरा बासी कढ़ी जैसा हो जाता है न? मुझे लगता है कि आपको तो ऐसा नहीं होता होगा, है न? एक बार ऐसे उतरकर देखना। कभी ऐसा वक्त आए तो उतरकर देखना और फिर चेहरे के हावभाव बिगाड़े बगैर वापस बैठना।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हो, उतना आसान नहीं है।

दादाश्री : आसान नहीं होता, लेकिन ये बात किस लिए कर रहे हैं कि ये बात उसकी श्रद्धा में बैठ जाए न, तो धीरे-धीरे अनुभव होते जाते हैं।

हम ऐसा करने के लिए नहीं कहते। किन्तु ये समझ लेना है कि इस तरह हमें प्रकृति का रक्षण करना बंद करना पड़ेगा। प्रकृति का जितना रक्षण करते हैं, वह गलत है न! पड़ोसी के तौर पर फर्ज अदा करना है, किन्तु ऐसा रक्षण थोड़े ही कर सकते हैं? चंदूभाई से कहना कि कोई उतार दे तो उतर जाना और वापस बुलाए तो बैठ जाना।

प्रश्नकर्ता : कई बार हर एक मौके पर, 'ये प्रकृति है' ऐसा ख़्याल नहीं रहता।

दादाश्री : इतनी ज़्यादा जागृति नहीं रहती न! इसलिए तो हम हिलाते (जागृत करते) रहते हैं, कि जिससे जागृत रह पाएँ। लेकिन उसे हम उठने को कहें, तब 'हाँ उठता हूँ, हाँ उठता हूँ' कहकर, फिर पलटकर सो जाता है।

व्यवस्थित के ज्ञान से छूटे पोतापणा

अपने पास 'व्यवस्थित' का इतना अच्छा ज्ञान है न! साधन नहीं है 'व्यवस्थित' का?

प्रश्नकर्ता : साधन है, बहुत अच्छा है।

दादाश्री : निबेड़ा आएगा न? निबेड़ा आएगा ऐसा भरोसा आ गया न?

प्रश्नकर्ता : किन्तु अपने ज्ञान में, यदि 'व्यवस्थित' की सही समझ आए तो *क्या पोतापणा* छूट जाता है?

दादाश्री : छूट जाता है। 'व्यवस्थित' *पोतापणा* छोड़ने के लिए ही मैंने दिया है, और 'एक्ज़ेक्ट' है। 'व्यवस्थित' मतलब 'सायन्टिफिक' वस्तु है। वह कोई आपको अंदाजन से दी हुई वस्तु नहीं है। झूठा अवलंबन नहीं दिया है, 'एक्ज़ेक्ट' (यथार्थ) है।

नासमझी से टिका है पोतापणा

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* जिसे है और जो कहता है कि यह 'मैं हूँ, मैं चंदूभाई हूँ' और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा भी कहता है, फिर रक्षण भी करता है, वो सब किसे होता है? वासत्व में वह कौन है?

दादाश्री : नहीं, नहीं। कोई है ही नहीं। ज्ञान है इसलिए 'मैं शुद्धात्मा' बोलता है, और जो पक्ष लेता है वो अज्ञान है। *पोतापणा* रखता है वो अज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* कौन रखता है?

दादाश्री : नासमझी है। अभी उतना अहंकार टूटा नहीं है। उल्टी समझ है, अभी भी वो उल्टी समझ छूटती नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अहंकार किसे है? वो कौन है?

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा' कहता है वो शुद्धात्मा ही है, वो ज्ञान ही है और जो उल्टा करता है वो अज्ञान है। अज्ञान यानी बुद्धि और अहंकार, मतलब 'मैं चंदूभाई हूँ' वही का वही।

प्रश्नकर्ता : उसे आप *बावो* कहते हो?

दादाश्री : अरे वो भी चंदूभाई का ही न! 'मैं चंदूभाई हूँ', ऐसा अभी भी खुद का पक्ष रखता है, 'उसे' 'मैं शुद्धात्मा' होना है। शुद्धात्मा हो गए हो फिर भी चंदूभाई का पक्ष छोड़ते नहीं हो। इसलिए जब तक चंदूभाई का पक्ष नहीं छोड़ोगे, तब तक ज्ञान कच्चा रहेगा।

प्रश्नकर्ता : वह *बावो*?

दादाश्री : वह ही *बावो* न। उसे दोनों तरफ़ रहना है।

प्रश्नकर्ता : उस *बावो* को छोड़कर शुद्धात्मा के साथ जोइन्ट कर देना है?

दादाश्री : नहीं, शुद्धात्मा तो हम हैं ही।

समझ से छूटे वो पद

पोतापणा छूट जाना आसान बात नहीं है। ऐसी समझ आना मुश्किल है, उसके लिए ज़्यादा (जागृति का पुरुषार्थ) नहीं किया है। ज़ोर करने जाएगा तब वो तो टूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादा मिले और दादा के सानिध्य में हों, तो हम भाव करें कि हमें छूटना है, तो समझ तो आएगी न? *पोतापणा* छूट जाए ऐसी समझ तो आएगी न, दादा के पास रहने से।

दादाश्री : समझ आए तो छूट जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो वो समझ किस तरह उत्पन्न हो?

दादाश्री : कृपा से। सभी के लिए कृपा चाहिए। किन्तु जिसे छोड़ना हो उसे कृपा मिल ही जाती है। छोड़ने की इच्छा, सच्ची भावना हो, तो छूटने लगता है। उसे क़ीमती पद कहते हैं!

ज्ञानी कभी रक्षण नहीं करते

हमसे कोई कहे कि, 'आप में बरकत नहीं है', तो मैं कहूँ कि, 'भाई मैं तो पहले से ही जानता हूँ, किन्तु आपको अभी पता चला।'

प्रश्नकर्ता : 'आप तो अब कह रहे हो किन्तु, मैं तो पहले से जानता हूँ।' बहुत सुंदर बात कही दादाजी।

दादाश्री : आपको तो अभी पता चला किन्तु मैं तो पहले से जानता हूँ, छोटा था तब से जानता हूँ। शादी कैसे करवाई? शादी भी नहीं करने दे! किन्तु *पोतापणा* छूट ही गया था न! कोई कहे कि 'आप स्त्री हो', तो मैं कहता हूँ, 'बराबर है, तुम्हें तो आज पता चला न?' ऐसा करने से *पोतापणा* छूट जाता है। *पोतापणा* छोड़ना आसान नहीं है न? आपको ऐसा लगता है न, छूटना आसान नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के सिवा और कोई नहीं छोड़ सकता।

दादाश्री : तुझ में अक़्ल नहीं है, ऐसा कहा तो फिर आप दोबारा मुझे नहीं मिलोगे, चेहरा नहीं दिखाओगे। चेहरा ठीक नहीं दिखेगा, अरे, बिना अक़्ल के हो, ऐसा बोलते हो? कैसी लगी मेरी बात?

प्रश्नकर्ता : बराबर है। दादा जैसे ज्ञानी के अलावा किसीका भी *पोतापणा* नहीं छूटता। और जिसका *पोतापणा* छूट गया उसे ज्ञानी कहते हैं।

दादाश्री : मतलब अब पूरा *पोतापणा* छोड़ नहीं देना है। *पोतापणा* भले रहे किन्तु *पोतापणा* की रक्षा नहीं करनी है। रक्षा करने के समय रक्षा नहीं करनी, ऐसी स्थिति चंदूभाई की आएगी, तब *पोतापणा* छूटे, वह ज्ञानी कहलाता है।

खटके, तो जाए संपूर्ण पोतापणा

प्रश्नकर्ता : संपूर्णरूप से *पोतापणा* कब जाता है?

दादाश्री : जिसे खटकता रहता है उसका *पोतापणा* चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, खटकता रहता है उसे। क्योंकि इन सब के अंदर संस्कार के जोश में *पोतापणा* ही उसे...

दादाश्री : उन लोगों को खटकता ही नहीं है। याद भी नहीं आता। हमारे कहने पर याद आता है। खटकने से चला जाता है। क्या खटकता है? तब कहे कि ये *पोतापणा* खटकता रहता है। खटकने से चला जाता है, पर खटकता ही नहीं है न! *पोतापणा* करने में खुशी ही मिलती है।

प्रश्नकर्ता : भरा हुआ माल दिखता है। वो निकलता है तब वो माल दिखता है कि देखो ये *पोतापणा* का माल निकला।

दादाश्री : ममता जाने के बाद *पोतापणा* टिकता नहीं है। अहंकार और ममता चले गए तो *पोतापणा* ज़्यादा लंबे समय के लिए टिकता नहीं है। *पोतापणा* के माँ-बाप, ममता और अहंकार हैं।

नापसंद से छूटे पोतापणा

प्रश्नकर्ता : खुद की सेफसाईड नहीं देखे तो *पोतापणा* चला जाता है?

दादाश्री : ये बात तो सही है, कि खुद की सेफसाइड नहीं देखे तो *पोतापणा* चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : पसंद फिर नापसंद कैसे हो? पसंद का नापसंद में परिवर्तन कैसे हो?

दादाश्री : उसका परिणाम देख ले तो फिर नापसंद होने लगता है।

प्रश्नकर्ता : मतलब, नापसंद हुआ, तो *पोतापणा* घटता है?

दादाश्री : ज़रूर।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जो-जो पसंद था वो नापसंद हो जाएगा तब *पोतापणा* घटता जाएगा।

दादाश्री : हाँ।

अनुभव के प्रमाण से, पिघलता है पोतापणा

खुद की लॉ बुक से मानते हैं कि 'हम संपूर्ण हो गए।' तब मैंने उनसे कहा, 'कुछ भी हुए नहीं हो, बेकार कोशीष मत करना। अभी तो बहुत कुछ होना बाकी है। संपूर्ण हो जाना, वो क्या कोई लड्डू खाने जितना आसान है?' फिर मुझसे कहते हैं, 'किन्तु अहंकार तो चला ही गया है।' मैंने कहा, 'गया नहीं है, सब भरा हुआ है, अभी जाँच-पड़ताल नहीं की है।'

किन्तु धीरे-धीरे जाएगा वो तो। जैसे-जैसे अनुभव की ठोकरें खाएँगे, जितना अनुभव का प्रमाण उतना *पोतापणा* टूटा। (डिस्चार्ज) अहंकार का जाना, मतलब *पोतापणा* खत्म हो जाता है न! अभी तो कितने सारे अनुभव होंगे तब *पोतापणा* छूटने का अंश आएगा।

मूल अहंकार चला गया, 'चार्ज' अहंकार चला गया। उसे ही अहंकार कहते हैं। किन्तु 'डिस्चार्ज' अहंकार जाना आसान नहीं है। अहंकार चला गया, उसका मतलब क्या है? गर्व नहीं, गारवता नहीं, *पोतापणा* नहीं। क्या ये सबकुछ नहीं जाना चाहिए? 'ज्ञान' के बाद अहंकार तो चला ही गया है। 'चार्ज' अहंकार तो चला गया। तो फिर कौन-सा अहंकार रहा? 'डिस्चार्ज।' जितने अनुभव होंगे उतना 'डिस्चार्ज' अहंकार कम होगा, और बाद में *पोतापणा* धीरे-धीरे कम होगा। ऐसे ही कम नहीं होगा। तब वह कहता है, 'ऐसा तो सारी ज़िन्दगी में नहीं हो सकता?' मैंने कहा, 'एक-दो जन्मों में मोक्ष में जा सकोगे।' दूसरी झूठी आशाएँ रखने का क्या मतलब? झूठी आशाएँ रखने से फ़ायदा होगा? यह ज्ञान मिला वो तो धन्यता ही है न!

अटके हैं पोतापणा के सामान से

(कषायरूपी) एक भी सामान जब तक अपने पास है तब तक आत्मा पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाएगा।

प्रश्नकर्ता : सामान के बारे में ज़रा और समझाइए न, दादाजी।

दादाश्री : जिसके आधार पर अटक गए हैं वो सामान ही है न!

प्रश्नकर्ता : सामान को *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए) कह सकते हैं?

दादाश्री : अटकण नहीं, कषायों की मज़बूती से अटक गया है, भीतर सब पड़ा हुआ है। इच्छाएँ और सबकुछ।

हाँ, जो चोखा हो, उसमें सामान नहीं रहता, आरपार होता है। जितना आरपार (चोखा) हुआ उतने कषाय गए, क्लीयर हो गए! ये ज्ञान ऐसा है कि अगर उसके पीछे पड़ोगे तो काम बन जाएगा। धीरे-धीरे सभी तरह के रोग निकल जाएँगे। जिसे रोग निकालना है, उसका निकल जाएगा।

पोतापणा और *आपोपुं*

प्रश्नकर्ता : *पोतापणा* और *आपोपुं (निजत्व), आपापणुं* जिसे कहते हैं, ये दोनों एक ही है?

दादाश्री : *आपापणुं* ज़रा बड़ा कहलाता है। *पोतापणा* सूक्ष्म कहलाता है।

जब तक *पोतापणा* नहीं जाता तब तक *आपापणुं* होता है।

प्रश्नकर्ता : और *आपापणुं* जाने के बाद *पोतापणा* के जाने की शुरूआत होती है?

दादाश्री : *आपापणुं* जाने के बाद, *पोतापणा* निकलने के लिए झलकता (दिखता) है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु हम सभी ने ज्ञान प्राप्त किया, तो फिर ज्ञान की जागृति से *आपोपुं* बढ़ता

जाता है (दिखाई देता है)। क्योंकि बाद में हमें भान आता है कि *आपोपुं* घटने के बदले बढ़ने लगा है।

दादाश्री : उसे *आपोपुं* नहीं कहते। *आपोपुं* तो, जब जानेवाला होता है न, तब वो *आपोपुं* गिना जाता है। जब 'प्योर' हो जाता है (स्थूल-सूक्ष्म दोषों कम हो जाते हैं) तब *आपोपुं* गिना जाता है, *पोतापणा* गिना जाता है।

पहचाननेवाला ही पाता है

प्रश्नकर्ता : जब ऐसी सूक्ष्म बात निकलती है न तब, उस समय आपकी पहचान बहुत ऊँची समझ में आती है। आपकी दशा की अद्‌भुतता लगती है, 'अक्रम विज्ञान' एक अजूबा लगता है।

दादाश्री : ऐसी पहचान सबकी समझ में नहीं आती। पहचान पाना ये कोई आसान बात है क्या? पहचान पाए न, तो उस रूप हो जाता है। पहचान होना आसान बात नहीं है न! हाँ, हमारा *आपोपु* गया हुआ जिसे दिखता है, उसकी समझ में बहुत बड़ी बात आ गई है। वो '*आपोपु*' को समझ गया है।

आपोपुं गया, हुआ परमात्मा

आपोपुं किस तरह जाए? जिसका *आपोपुं* चला गया है उसके दर्शन से ही। बस, और कुछ नहीं।

प्रश्नकर्ता : दर्शन करने से ही हो जाता है?

दादाश्री : दर्शन करने से सबकुछ होता है। ये बात तो आज ही निकली है। पहले कभी *आपोपुं* शब्द निकला है? वो तो जब कोई प्रकरण खुला हो तब 'ऑपन' होता है।

आपोपुं जाए, उसका भगवत् चलाते हैं सब। *पोतापणा* जाए तो भगवत् चलाते हैं। फिर क्या झँझट है, बोलो। हमारा *आपोपुं* चला गया, फिर सबकुछ भगवत् चलाते हैं। मुझे कहाँ ये सारी झँझट है? कृष्ण भगवान घोड़े हाँकते रहते हैं। हमें तो अंदर बैठे-बैठे देखते रहना है। अर्थात् भगवान कब सब सँभाल लेंगे? जब *आपोपुं* छोड़ेगा, तब। इसलिए तो कृपालुदेव ने कहा है न कि, 'भगवत्, भगवत् का सँभाल लेंगे, किन्तु *आपोपुं* छोड़ेगा तो।'

जब तक *आपोपुं* होता है तब तक भगवान की ज़िम्मेदारी नहीं होती। *पोतापणा* नहीं होता तब भगवान की ज़िम्मेदारी होती है। हाँ, 'फुल' ज़िम्मेदारी उनकी।

आपोपुं जाने में तो बहुत समय लगेगा। दूसरे सब बाहर के पड़ोसीयों के साथ पहले *निकाल* तो करो। बाकी, *आपोपुं* जाना और भगवान होना उसमें फ़र्क नहीं है। अंत में, 'हमारा' *आपोपुं* गया इसलिए 'भगवान ने' सिर पर ज़िम्मेदारी ले ली। अब हमें भार नहीं है। हमारा *आपोपुं* गया तबसे उन्होंने अपने सिर पर भार ले लिया। तभी तो हम मौज कर रहे हैं न! और मैंने तो ये बहुत जन्मों से किया था और आपको सहज हो जाता है, इसलिए लाभ उठा लेना चाहिए। आख़िर में *आपोपुं* जाएगा तब काम बनेगा।

'परमात्मा' होना और '*आपोपुं* जाना' उन दोनों में फ़र्क नहीं है। यदि *आपोपुं* गया तो परमात्मा के सिवा और कुछ भी नहीं है।

आपापणुं सौंप दिया

देखो, मैं आपको बता दूँ। ऐसा करते-करते हमारा बहुत काल चला गया (बहुत जन्म चले गए)। इसलिए आपको तो मैं आसान रास्ता बताता हूँ। मुझे तो रास्ते ढूँढ़ने पड़े थे। आपको तो, मैं जिस रास्ते गया, वही रास्ता दिखा देता हूँ, ताले खोलने की चाबियाँ दे देता हूँ।

ये 'अंबालाल मूलजीभाई पटेल' हैं न, उन्होंने

अपना *आपापणुं* छोड़कर भगवान को ही सौंप दिया है। इसलिए भगवान उनका सबकुछ सँभाल लेते हैं। और ऐसा सँभालते हैं न, कि क्या बताऊँ! किन्तु जब खुद का *आपापणुं* छूट गया, अहंकार चला गया, उसके बाद ये हुआ। बाकी, अहंकार चला जाए ऐसा नहीं है।

जब तक *पोतापणा* है तब तक ही भेद है और तब तक ही भगवान दूर हैं। *पोतापणा* छोड़ा कि भगवान आपके पास ही हैं। छोड़ दो न, (फिर) एकदम आसान! *पोतापणा* छोड़ा तो भगवान ही आपका सबकुछ चला लेंगे। आपको कुछ करने का रहता ही नहीं है, यदि आप *पोतापणा* छोड़ दो तो।

पोतापणा छूटे तो...

हमने अंतराय नहीं डाले हैं इसलिए हमें कोई अड़चनरूप ही नहीं होता। और ऊपर हमारा *ऊपरी* भी कोई नहीं है। और जो *ऊपरी* है वह भगवान तो हमारे वश में हो गए हैं। भगवान किसके वश में हो जाते हैं? जिसका *पोतापणा* छूटे। आप भी जब *पोतापणा* छोड़ दोगे, जब सबकुछ छूट जाएगा, तब भगवान आपके वश में भी हो जाएँगे। *पोतापणा* छोड़ना ये कोई आसान बात नहीं है? किन्तु अब ये मार्ग है, इसलिए छूट जाएगा। मार्ग है इसलिए छूटेगा या नहीं छूटेगा? आश्चर्य की प्रतिमा! जिसे *पोतापणा* नहीं है, गर्व नहीं है, गारवता नहीं है, किसी भी तरह की कोई स्पृहा नहीं है, किसी भी तरह की भीख नहीं है। जिसे वर्ल्ड में मान की, किर्ती की, लक्ष्मी की, विषय की ज़रा-सी भी भीख नहीं है। वर्ल्ड में कोई भी चीज़ जिसे नहीं चाहिए, उसे भगवान वश नहीं होंगे तो दूसरा कौन वश होगा?

अब आप इस मार्ग पर चल रहे हो इसलिए आपको भी भगवान वश हो जाएँगे। सिर्फ मुझे ही वश हो गए हैं ऐसा नहीं है, हर एक के वश में हो सकते हैं। और भगवान बन सकते हैं। मनुष्य भगवान बनता है, क्रमिक इवोल्युशन में वो डेवलप (विकास) होते-होते-होते उसका अंतिम रूप भगवान का ही है।

किन्तु इस काल में भगवानपद का डेवलपमेन्ट कच्चा रहता है। जो लोग भगवान होकर बैठे हैं, वो अपनी जोखिमदारी पर हो बैठे हैं, उसमें हमें कुछ लेना-देना नहीं है। इस काल में भगवान पद नहीं है।

मतलब प्रकृति भगवान स्वरूप हो जाती है

प्रश्नकर्ता : मतलब पूरा रिलेटिव हिस्सा भगवान जैसा हो जाता है, ऐसा?

दादाश्री : ऐसी क्षमा दिखती है, ऐसी नम्रता दिखती है, ऐसी सरलता दिखती है, ऐसा संतोष दिखता है। किसी चीज़ का इफेक्ट ही नहीं होता। *पोतापणा* नहीं होता। ऐसा सब, लोगों को दिखाई देता है। बहुत सारे गुण उत्पन्न हो जाते हैं। आत्मा के गुण नहीं और पुद्गल के भी गुण नहीं, ऐसे गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

इस 'वर्ल्ड' में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होता कि जिसे *पोतापणा* नहीं हो। ब्रह्मांड में तो अलग बात है, वहाँ तो तीर्थंकर हैं, और सभी हैं। जब कि अपनी इस दुनिया में *पोतापणा* नहीं हो ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता। ऐसे तो, सिर्फ जो तीर्थंकर गोत्र के लिए अनुत्तीर्ण हुए हों उतने ही होते हैं।

जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' पत्रिका के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पत्ता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पत्ते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पत्ता (पीनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेइल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

त्रिमंदिर अडालज में आयोजित हुआ तीसरा हिन्दी शिविर

तीसरा हिन्दी शिविर दिनांक १९ से २२ मई २०११ के दौरान त्रिमंदिर अडालज में आयोजित किया गया। भारत के विभिन्न राज्यों से कुल मिलाकर १३०० जितने हिन्दी भाषी महात्मा-मुमुक्षुओं ने इस शिविर में भाग लिया। शिविरार्थी महात्माओं के लिए सत्संग, ज्ञानविधि, भक्ति, गरबा, प्रक्षाल-पूजा-आरती तथा दर्शन जैसे वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

शिविर के दौरान महात्माओं के द्वारा पूछे गए बहुत सारे प्रश्नों का आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के द्वारा सही समाधान पाकर सभी महात्माओं को उनकी ज्ञानपिपासा की तृप्ति हो गई ऐसा लगा। दि. 19 मई रात को परम पूज्य दादा भगवान के जीवनचरित्र तथा आत्मविज्ञान पर आधारित डाक्युमेन्टरी फिल्म दिखाई गई। दिनांक २० मई को शाम को आयोजित ज्ञानविधि कार्यक्रम में करीबन ९५० जितने नये मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान पाया। ज्ञान लेने आए सभी नये मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान का अच्छा अनुभव हुआ। दि. २० मई रात को विशेष रूप से गरबा का आयोजन किया गया। जिसमें सभी महात्मा उल्लसित होकर नाच उठे। पूज्य दीपकभाई की प्रत्यक्ष हाज़िरी में सभी ने गरबा का बहुत आनंद उठाया। दि. २० और २१ मई को सुबह में सभी महात्माओं के लिए पूज्य नीरूमाँ के निवास-वात्सल्य के दर्शन, त्रिमंदिर में श्री सीमंधर स्वामी भगवान का प्रक्षाल-पूजा-आरती तथा दि. २२ मई को पूज्य दीपकभाई के दर्शन के विशेष कार्यक्रम भी रखे गएँ। पूज्य दीपकभाई के दर्शन पाकर महात्माओं ने अति धन्यता का अनुभव किया। शिविर में आए महात्माओं के बच्चों के लिए विशेष रूप से दो दिन के संस्कार सिंचन शिविर का भी आयोजन दि. २०-२१ मई को किया गया। उसमें दादाजी का ज्ञान बच्चों को उनकी भाषा में समझ में आए इस तरह सेवार्थी महात्माओं के द्वारा विभिन्न प्रकार से शिखाया गया।

कई महात्मा-मुमुक्षु पहली बार ही अडालज त्रिमंदिर संकुल में पधारे थें। सभी को विशेष रूप से शांति और आनंद की अनुभूति हुई। कईं महात्माओं ने वे महाविदेह क्षेत्र में, तो कईं ने स्वर्ग में आ गए हों, तो कई ने यहाँ से जाने को दिल नहीं करता, ऐसे अपने अनुभव कहें। कई लोगों ने यहीं पर हमेशा के लिए रह जाए ऐसे भाव प्रकट किए। ऐसे हिन्दी शिविर के आयोजन हर साल विशेष रूप से होने ही चाहिए ऐसे भाव महात्माओं ने प्रकट किए। रहने तथा खाने-पीने की अच्छी सुविधा और सभी महात्मा-सेवार्थिओं का प्रेममय व्यवहार के लिए शिविरार्थी महात्माओंने सच्चे दिल से धन्यवाद व्यक्त किया।

साथ ही हिन्दी क्षेत्रों में पूज्य दीपकभाई के सत्संग तथा ज्ञानविधि के अधिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ ऐसी भावना यहाँ पधारे महात्माओं ने की। इस अवसर पर कर्म का विज्ञान तथा आप्तवाणी श्रेणी-५, इन दो हिन्दी किताबों का पूज्य दीपकभाई के करकमलों के द्वारा विमोचन हुआ। सभी महात्माओं ने इस पवित्र भूमि पर हुए दिव्य अनुभव को दिल में रखकर दादाजी का आत्मविज्ञान सारा जग पाये ऐसी प्रबल जगकल्याण की भावना प्रकट की। दि.२२ मई को पूज्य दीपकभाई के सत्संग के बाद इस शिविर का समापन हुआ।

दि. 23 मई को शिविर में पधारे महात्माओं के लिए पूज्य दीपकभाई की निश्रा में एक दिन की अंबाजी यात्रा का आयोजन किया गया। ७०० हिन्दी शिविरार्थी महात्मा तथा गुजरात के ३००० महात्माओं ने इस यात्रा में भाग लिया। अंबाजी में माँ अंबा के दर्शन के बाद मंदिर के प्रांगण में ही भक्ति, प्रार्थना, सत्संग तथा पूज्य दीपकभाई के दर्शन का कार्यक्रम रखा गया। आत्मज्ञानी के साथ यात्रा का अनुभव शिविरार्थी महात्माओं के लिए अविस्मरणीय रहा।

महात्माओं के लिए नया हिन्दी SMS ग्रुप

सत्संग की जानकारी एवं आप्तसूत्र पाने के लिए अपने मोबाईल से निम्नलिखित नंबर पर सूचनानुसार SMS कीजिए

नं.	मेसेज में क्या लिखे	नीचे दिए गए नं. पर SMS कीजिए	नोट
1	**start 6**	**1909**	**SMS** का उत्तर पढ़कर, उस अनुसार मेसेज भेजें।
2	**y**	**1909**	**SMS** का उत्तर पढ़कर, उस अनुसार मेसेज भेजें।
3	**on mhthindi**	**09870807070**	हिन्दी **SMS** ग्रुप के मेम्बर होने के लिए

इस प्रकार 3 **SMS** आपको हिन्दी **SMS** ग्रुप में शामिल होने के लिए भेजने हैं। जो **SMS** आपको मिलेंगे, उसका कोई चार्ज नहीं है। यह ग्रुप प्रायोगिक तौर पर चालु किया गया है। जिन्हों ने नं. 1 और 2 वाले **SMS** पहले भेजे हुए हैं, उन्हें सिर्फ **SMS** नं. 3 ही भेजना है।

Pujya Deepakbhai's New Zealand - Australia -Singapore 2011 Satsang Schedule

Date	Day	Time	Event	Venue	Contact
19 Jul	Tuesday	7:00 PM - 9:00 PM	Aptaputra Satsang	**Dominion Road School,** 4 Quest Terrace, Off Akarana Ave, Mount Roskill, Auckland 1041 - New Zealand	Veeral Sheth +64 021 0376434 Vaishali Sheth +64 021 0399536
20 Jul	Wednesday	6:15 PM - 8:45 PM	Deepakbhai Satsang		
21 Jul	Thursday	6:15 PM - 8:45 PM	Deepakbhai Satsang		
22 Jul	Friday	5:45 PM - 9:30 PM	G N A N V I D H I		
23 Jul	Saturday	4:00 PM - 6:30 PM	Aptaputra Satsang	9, Carinya Boulevard, Burnside, Victoria 3023, Melbourne, Australia	Vishal Jaitha +61 0403886647
23 Jul	Saturday	7:00 PM - 9:30 PM	Deepakbhai Satsang	**The Northcott Building** 1 Fennell Street, North Parramatta, New South Wales - 2150 Australia	+61 0421127947 +61 0433787638, +61 0438489185 +61 0296260029
24 Jul	Sunday	4:00 PM - 7:00 PM	G N A N V I D H I		
25 Jul	Monday	7:00 PM - 9:00 PM	Deepakbhai Satsang		
26 - 28 Jul	Tue, Wed, Thu	All Day	Mahatmas Satsang Shibir at Wollongong (Sydney) http://www.wslr.com.au/	Pl. contact Mahatma Dilip Bajaj / Dharmeshbhai Shah	+61 0421127947 +61 0433787638, +61 0438489185 +61 0296260029
29 Jul	Friday	7:30 PM - 9:30 PM	Deepakbhai Satsang	**Warwick Hall,** 12 Dorchester Avenue, Behind Warwick Shopping Ctr, Warwick, Perth, WA-6024 Australia	Bhavin Desai +61 0430148386 Vinodbhai +61 0425255677
30 Jul	Saturday	4:00 PM - 7:00 PM	G N A N V I D H I		
31 Jul	Sunday	4:30 PM - 6:30 PM	Deepakbhai Satsang		
01 - 04 Aug	Mon, Tue, Wed, Thu	All Day	Singapore Shibir	Pl. contact Mahatma Nilesh Shah sagarnilesh@yahoo.com.sg	Nilesh Shah +65 8112 9229

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Program 2011

Venue	Date	Day	Program	From	To	Venue	Contact-nos
Toronto, Canada	20-Jun	Mon	Satsang	6.30 PM	9.30 PM	Arya Samaj Vedic Cultural Center	416-675-3543
Toronto, Canada	21-Jun	Tue	Satsang	6.30 PM	9.30 PM	4345, 14th Ave, Markham ON - L3R 0J2	416-299-9794
Toronto, Canada	22-Jun	Wed	**Gnanvidhi**	6.00 PM	9.00 PM	info@dadabhagwan.ca	416-746-3023
Chicago, IL	24-Jun	Fri	Satsang	7.00 PM	9.00 PM	Forest View Educational Center,	847-980-5759
Chicago, IL	25-Jun	Sat	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.00 PM	Field House, 2121 S. Goebbert Road	847-885-8576
Chicago, IL	25-Jun	Sat	**Gnanvidhi**	4.00 PM	7.00 PM	Arlington Heights, IL 60005	847-634-3636
Chicago, IL	26-Jun	Sun	Satsang	10.00 AM	12.00 PM	atul.pandya7@gmail.com	815-284-3881
New Jersey	28-Jun	Tue	Satsang	6.30 PM	9.30 PM	Vaikunthdham (Kearny Temple)	201-229-1483
New Jersey	29-Jun	Wed	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	156 Schuyler Ave	732-322-2639
New Jersey	29-Jun	Wed	**Gnanvidhi**	6.30 PM	9.30 PM	Kearny, NJ 07031	856-875-4775
New Jersey	30-Jun	Thu	Satsang	6.30 PM	9.30 PM	eksoul@hotmail.com	609-233-2049
New York, NY	2-Jul	Sat	Satsang	5.30 PM	7.30 PM	Queens College (Kupferberg Center)	516-300-0434
New York, NY	3-Jul	Sun	Aptaputra Satsang	9.00 AM	12.00 PM	65-30 Kissena Boulevard Flushing	917-270-0922
New York, NY	3-Jul	Sun	**Gnanvidhi**	5.00 PM	8.00 PM	NY 11367	718-347-0050
New York, NY	4-Jul	Mon	Picnic	9.30 AM	2.15 PM	rajensuddhatma@gmail.com	718-224-3043
Jacksonville, FL	5-Jul	Tue	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Landmark middle School	904-704-6966
Jacksonville, FL	6-Jul	Wed	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM	101 N. Kernan Boulevard	904-262-1795
Jacksonville, FL	6-Jul	Wed	**Gnanvidhi**	6.00 PM	9.00 PM	**Jacksonville, Florida 32277**	973-618-6775
Jacksonville, FL	7-Jul	Thu	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	needom@gmail.com	904-737-1674
Atlanta, GA	9-Jul	Sat	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	**Loews Atlanta Hotel**	229-425-5453
Atlanta, GA	10-Jul	Sun	Satsang	10.00 AM	12.30 PM	1065 Peachtree Street	678-595-9631
Atlanta, GA	10-Jul	Sun	**Gnanvidhi**	4.30 PM	7.30 PM	**Atlanta, Georgia, 30309**	678-778-0109
Atlanta, GA	11-Jul	Mon	GP - Shibir	9.30 AM	7.00 PM	Phone: (404) 745-5000	404-538-5000
Atlanta, GA	12-Jul	Tue	GP - Shibir	9.30 AM	7.00 PM	Fax: (404) 745-5001	404-538-5000
Atlanta, GA	13-Jul	Wed	GP - Shibir	9.30 AM	7.00 PM	http://www.loewshotels.com/en/Atlanta-Hotel	
Atlanta, GA	14-Jul	Thu	**Murti Pran Pratistha**	9.30 AM	12.00 PM	nilimapatel58@yahoo.com	
Atlanta, GA	14-Jul	Thu	GP - Shibir	4.30 PM	7.00 PM		
Atlanta, GA	15-Jul	Fri	**Gurupurnima**	8.00 AM	2.00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

दि. १३ अगस्त (शनि) सुबह ९ से ११ त्रिमंदिर अडालज में **रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति**

दि. २२ अगस्त (शुक्र) रात १० से १२ त्रिमंदिर अडालज में **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति**

पर्युषण पर्व - दि. २५ अगस्त से १ सितम्बर २०११

पर्युषण के दौरान 'आप्तवाणी-४' गुजराती ग्रंथ के शेष रहे पृष्ठों पर वाचन और सत्संग होगा। रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु दि. ३१ जुलाई 2011 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

दि. २ सितम्बर (शुक्र) सुबह - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

दि. ३ सितम्बर (शनि) शाम ४-३० से ७-**सत्संग** तथा **४ सितम्बर (रवि)** दोपहर ३-३० से ७-**ज्ञानविधि**

चेन्नई

दि. **१४,१६ अगस्त** (रवि, मंगल), शाम ६-३० से ९-**सत्संग** तथा **१५ अगस्त** (सोम), शाम ६ से ९-३०-**ज्ञानविधि**

स्थल : राजा अन्नामलाई मंडरम्, नं.5, एस्पानडे रोड, हाईकोर्ट के पास, **चेन्नई. संपर्क :** 044-25321040

हैदराबाद

दि. **१९-२० अगस्त** (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९-**सत्संग** तथा **२१ अगस्त** (रवि), शाम ५ से ८-३०-**ज्ञानविधि**

स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड, **हैदराबाद. संपर्क :** 9989841786

दिल्ही

दि. **९-१० सितम्बर** (शुक्र-शनि) - **सत्संग** तथा **११ सितम्बर** (रवि) - **ज्ञानविधि**

समय और स्थल की जानकारी अगले अंक में दी जाएगी। **संपर्क :** 9310022350

जलंधर

दि. **१३-१४ सितम्बर** (मंगल-बुध), शाम ६ से ८-३०-**सत्संग** तथा **१५ सितम्बर** (गुरु), शाम ५-३० से ९-**ज्ञानविधि**

स्थल : देश भगत यादगार होल, जी.टी रोड, **जलंधर.** **संपर्क :** 9814063043

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत + **'अरिहंत'** चेनल पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)
+ **'दूरदर्शन-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA + **'TV Asia'** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

UK + **'विनस'** टीवी (स्काय चेनल ८०५) पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)

USA-UK + **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

+ **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर (हर रोज़) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत + **'दूरदर्शन'** पर हर गुरुवार-शुक्रवार सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - **नई दृष्टि, नई राह**
+ **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में)
+ **'अरिहंत'** चेनल पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)
+ **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल) तथा और सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र)
+ **'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)

USA + **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

UK + **'विनस'** टीवी (स्काय चेनल ८०५) पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

USA-UK + **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)

जून २०११
वर्ष - ६, अंक - ८
अखंड क्रमांक - ६८

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

डिस्चार्ज अहंकार वही 'पोतापणुं'

हम जब 'ज्ञान' देते हैं तब आपके अहंकार और ममता सारे चले जाते हैं, लेकिन अभी *पोतापणुं* रह गया है। *पोतापणुं* यानी क्या कि वह अहंकार, जो जीवित नहीं है। अहंकार और ममता चले गएँ, उसी भाग को अभी हम *पोतापणुं* कहते हैं। *पोतापणुं* यानी भरा हुआ माल, भरा हुआ अहंकार, वह अब निकलता रहता है। भरा हुआ अहंकार तो (आत्मज्ञान नहीं पाया है) उन लोगों का भी खाली हो रहा है किन्तु उनको नया भरा भी जाता है और 'अपने' (महात्माओं) में वह नया भरनेवाला (चार्ज) अहंकार निकल गया और भरा हुआ (डिस्चार्ज) अहंकार रहा है। अपने यहाँ वह भरा हुआ अहंकार खाली होता जाता है, लेकिन अब नया नहीं भरता। यानी 'चार्ज' अहंकार तो चला गया किन्तु 'डिस्चार्ज' अहंकार है, वही *पोतापणुं* कहलाता है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.